भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 12 | **मई-जून (संयुक्तांक)** 2011 | **अंक** 5-6

विख्यात जर्मन कवि एमानुएल गाईबल (1815-84) को उनकी प्रसिद्ध कविता 'वसंत की आशा' के विषय में मिले पत्रों में एक यह था—

''मान्यवर! आज हमने आपकी कविता 'वसंत की आशा' पूरी कंठस्थ कर ली। आठ दिन पहले हममें से छ: को यह कविता याद न करने के कारण स्कूल में आधा घण्टा ज्यादा बैठना पड़ा। कविता लिखते समय आपने यह बात सोची भी नहीं होगी। फिर भी आप अच्छे आदमी हैं। आप शिलर की तरह लम्बी कविताएँ नहीं लिखते। उनकी कविताएँ हमें अगले साल सीखनी पड़ेंगी। मास्टरजी कहते हैं कि 'वसंत की आशा' सुन्दर कविता है। सुन्दर कविताएँ बहुत हैं और सभी हमें याद करनी पड़ती हैं। इसलिए आपसे प्रार्थना है कि अब और कविताएँ न लिखें। हमें तो हर कवि के जन्म और मृत्यु के वर्ष भी याद रखने पड़ते हैं। गनीमत है कि हमें आपका मृत्यु-वर्ष नहीं याद करना पड़ेगा, क्योंकि हम आपके दीर्घायुष्य की कामना करते हैं।

हम हैं आपके-ब्ल्यूखर स्कूल की
पाँचवीं कक्षा के छात्र''

❑ ❑ ❑

स्व० माखनलालजी चतुर्वेदी के कमरे में एक घड़ी थी, वह सदा आधा घण्टा आगे रहती थी।

मैंने पूछा—''दादा, यह घड़ी आगे क्यों रहती है?''

बोले—''अरे, वह प्रगतिशील हो गयी है।''

—रामनारायण उपाध्याय

❑ ❑ ❑

एक बार किसी ने जार्ज बर्नार्ड शा को पत्र लिखा, जिसमें उसने 'शा' के बजाय 'शाम' (Shawm) लिख दिया था। देखकर शा को गुस्सा आया। उन्होंने अपनी पत्नी को वह पत्र दिखाते हुए कहा—''इस मूर्ख को मेरा नाम भी सही ढंग से लिखना नहीं आता। फिर 'शाम' तो कोई शब्द भी नहीं है।'' इस पर पत्नी ने शब्दकोश खोला और 'शाम' शब्द निकालकर शा को दिखाया। 'शाम' का अर्थ दिया हुआ था—''एक पुराने किस्म का साज, जो अब प्रयोग में नहीं आता।''

❑ ❑ ❑

मांटेन कहा करता था कि तीन समागमों को वह आवश्यक समझता है—प्रेम-समागम, मित्र-समागम और ग्रन्थ-समागम। तीनों में बड़ी समता है। लेकिन शायद इन तीनों में ग्रन्थ सबसे वफादार हैं। मैंने यह भी पाया है कि ग्रन्थ प्राय: अपने लेखकों से अधिक सयाने और वाक्पटु होते हैं। **—आंद्रे मोरवा**

अन्तर्-विघटन के खतरे

तपती दोपहर में अपने घर, ऑफिस या दूकान को छोड़कर ज़रा बाहर तो निकलिए जनाब! कंक्रीट के जंगल में उड़ती धूल और भिन्न-भिन्न वाहनों से निकलते धूम्रावरण में लिपटे दौड़ते-भागते लोगों के बीच गुज़रते-गुज़रते कहीं दूर-दराज़ के किसी हरे-भरे पार्क या परिसर की तलाश कीजिये। वहाँ की सघन-हरीतिमा के बीच खुद में भरे-भरे, खिले-खिले, लाल-लाल गुलमोहर आपकी आँखों में ताज़गी का अहसास जगायेंगे। कुछ पलों का यह सुकून सुखा देगा आपका पसीना, दूर कर देगा आपकी थकान; प्रखर-ताप में झूमते गुलमोहर की ताज़गी का जज़्बा लेकर उसी क्षणिक-अन्तराल के बीच वापस लौटिये और कूद पड़िये कर्मक्षेत्र में।

इस बार गर्मियों का पारा चढ़ता रहा, आँधियाँ आती रहीं, पारा लुढ़कता रहा, यह सिलसिला अब भी जारी है। भाव और अभाव के दरम्यान सन्तुलन कायम करती प्रकृति भी अपना ऋतु-धर्म निभाने में बेबस हो चली है। कुछ इसी तरह बेबस, अक्षम होने लगा है हमारा अंत:सन्तुलित समाज। इस समाज का एक इतिहास है, परम्परा है, संस्कृति है। इसकी समग्रता के सुबद्ध प्राकृतिक-ढाँचे में बार-बार परिवर्तन हुए हैं, रूढ़ियाँ टूटती रही हैं, सुचिन्तित दार्शनिक एवं वैज्ञानिक धाराएँ प्रवाहित होती रही हैं। इसीलिए तो मध्यकालीन आक्रमणों के धर्मांध पाशविक-अनाचारों के बावजूद, बर्तानवी-हुकूमत की कटुताभरी यादगारों के बावजूद आज भी कायम है इस समाज का अध्यात्म—इसकी मानवता। इसी आध्यात्मिक-चिन्ता से उपजे मानवीय-मूल्य हमें प्राणि-मात्र के प्रति, जड़-चेतन के प्रति संवेदन-शील बनाते रहे हैं, अनपढ़-गँवार व्यक्ति के मन में भी अहिंसा, करुणा, मैत्री जैसे भावों का उद्रेक करते रहे हैं। इन सबके बावजूद अब लगता है कि हमारे समाज की प्राकृतिक, आध्यात्मिक ऊर्जा—मानव-मूल्यों का क्षरण होने लगा है। राजस्थान के रेगिस्तान में विलुप्त सरस्वती की तरह सूखने को विवश है गंगा-यमुना की अन्तर्धाराएँ, क्रमश: सूखते जा रहे हैं सप्तसिन्धु, अन्दर-ही-अन्दर टूट-टूट कर बिखर रहा है हमारा सामाजिक सन्तुलन।

आज़ादी से पहले उन्नीसवीं सदी के मध्य में अंग्रेजी-शिक्षा पद्धति ने हमारी सुषुप्त कुण्डलिनी को जागृत कर दिया। हमने अपनी परम्परा की, बौद्धिक-समीक्षा की जड़ीभूत रूढ़ियों पर प्रहार किये और नव्य-चेतना के आलोक में सत्य-संधान की ओर अग्रसर हुए। इसी दौर में हमारे समाज ने अपनी राजनीतिक-स्वतंत्रता के लिये लगातार नब्बे साल तक संघर्ष किया, पीढ़ियाँ बदलीं किन्तु जारी रहा सत्य-संधान, सतत चलता रहा संघर्ष। अंतत: हमने आज़ादी पायी, सामाजिक तौर पर स्वतंत्रता, समानता और भाईचारे की बुनियाद पर स्थापित किया विश्व का सबसे विशाल लोकतंत्र। चूँकि राजनय के दूसरे तंत्रों की अपेक्षा ऐतिहासिक तौर पर भी यह लोकतंत्र हमारी सामाजिक-प्रकृति के अनुकूल था, अत: इसकी सम्यक् प्रतिष्ठा के लिए हमारे नीति-निर्माताओं ने युगानुकूल संविधान की संरचना की और हम बढ़ चले अपनी दुनिया के साथ कदम-से-कदम मिलाते हुए।

इस कदम ताल के दरम्यान धीरे-धीरे उभरने लगे हमारे सामाजिक-अंतर्विरोध जिन्हें अपनी इतिहास-यात्रा में हम पचा चुके थे। वही सारी चीज़ें—वर्ण, जाति, धर्म, सम्प्रदाय, भाषा, प्रान्त आदि के रक्त-पिशाच फिर से जागृत होकर हमारे सामाजिक-सामरस्य को विकृत करने

शेष पृष्ठ 2 पर

पृष्ठ 1 का शेष

पर उतारू हो गये हैं। राजनीति में केन्द्रीय-स्तर पर वोट के गणित ने सामाजिक विघटन के मानक स्वीकार कर लिये और हमें बाँटना शुरू कर दिया। अल्पसंख्यक, बहुसंख्यक, सवर्ण, दलित, पिछड़े, आदिवासी जैसे विभाजन के समानान्तर पारम्परिक जातिवाद की अवधारणा मिटा रही है हमारी जातीय-पहचान, जिसे ब-मुश्किल हमने हासिल किया था और विश्व-समुदाय के बीच एक विराट् व्यक्तित्व बनकर उभरे थे। हमारे इसी व्यक्तित्व को रेखांकित करते हुए युग-कवि ने कहा था—''हेथाय आर्य, हेथा अनार्य, हेथा द्राविड़-चीन/शक-हूण-दल, पाठान-मोगल एक देहे होलो लीन।'' हमारी इसी जातीय पहचान को, हमारे विराट्-व्यक्तित्व को आज की स्वार्थपरक राजनीति विखण्डित करने पर तुली है। जिसके लिये तरह-तरह के हथकण्डे अपनाये जा रहे हैं, मण्डल-कमण्डल, आरक्षण-संरक्षण, सन्तुष्टिकरण, जातिगत जनगणना आदि क्रमशः तार-तार कर देंगे हमारे चिर-अर्जित सामाजिक-सामंजस्य को, मिटा देंगे हमारी जातीय-पहचान को और तब हमारे मानवीय-मूल्यों का नियामक होगा वैदेशिक मानवाधिकार-आयोग जो अभी भी हमारे पारम्परिक सामाजिक-मूल्यों की तुलना में काफी पिछड़ा हुआ है।

आत्म-पतन की इस सीमा तक आकर भी हम निराश नहीं हैं। सांस्कृतिक तौर पर आशावादी मनोवृत्ति से भरपूर हमारी चेतना केवल मनुष्य ही नहीं अपितु प्राणिमात्र में करुणा का प्रसार और मैत्री का संधान करती रहेगी और इसी क्रम में भीतर-ही-भीतर पुनर्संगठित होते जायेंगे हमारे सामाजिक-व्यक्तित्व के लगातार विघटित होते हुए अणु-परमाणु।

इधर प्रकृति भी हमारा साथ दे रही है। मौसम-वैज्ञानिकों द्वारा उद्घोषित इस वर्ष के 'सोलर-स्टार्म' एवं 'अलनीनो-इफेक्ट' को धता बताते हुए केरल के समुद्र-तट पर मानसून ने दस्तक दे दी है। वर्षा के स्वागत के लिये तैयार है हमारा लोक-जीवन, गुनगुना रहा है कवि-मन—

काले मेघा पानी दे!
पानी दे गुड़धानी दे,
ढोर-डंगर सानी दे,
जन-जन को तू बानी दे।

सर्वेक्षण

● **सरगना के साये में :** द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद वैश्वक-स्तर पर कुछ संरक्षकों का उदय हुआ। उनमें एक तो अपने ही सैद्धान्तिक अतिवाद का शिकार हो गया और दूसरे जिन्हें गुमान है कि उनकी जाति का जन्म दुनिया पर हुकूमत करने के लिए हुआ है। यह दूसरे सरगना अपनी व्यापार-बुद्धि से लाभ-हानि का हिसाब लगाते हुए कभी लोकतंत्र, कभी राजतंत्र, कभी सैनिक तानाशाही की पीठ थपथपाते हैं और कभी अपने फायदे के लिहाज़ से राजनीतिक ज़ेहाद। आतंक को जन्म देकर उसका पृष्ठपोषण एवं संरक्षण करते हैं और जब उनकी बिल्ली उन्हीं पर गुर्राती है तो वे उसकी गर्दन ऐंठ देते हैं। पिछले तीन दशकों से उन्हीं के द्वारा पोषित हमारे पड़ोसी हमें ज़ख्म देते रहे, हम आतंक का शिकार बनते रहे, मगर वे हमारी दर्दभरी चीत्कारों की अनसुनी करते रहे, अब जब उन्हीं के पैदा किये हुए भस्मासुर ने उन्हें चुनौती दी तो वे बौखला उठे और उन्होंने जोर-शोर से आतंक के खिलाफ युद्ध छेड़ दिया। अपने ही एक मानस-पुत्र को ज़ेहादी-शैतान एवं रक्तपिपासु-पिशाच बताते हुए करोड़ों डॉलर में उसके सिर की कीमत लगा दी। मगर एक दशक बीतने पर भी उनका अपराधी/मानस-पुत्र उनके हाथ न आया। आखिर उनकी गुप्तचर एजेन्सियों ने उसका ठिकाना ढूँढ़कर उसे ठिकाने तो लगा दिया मगर अब भी वे डरे हुए हैं। आतंक के रक्तबीज कब, कहाँ उन्हीं पर क़हर बरपा करेंगे, उन्हें नहीं मालूम। उन्होंने जिस बदनीयती के साथ इन खूनी-खेलों की शुरुआत की है उसका खामियाजा तो उन्हें भुगतना ही होगा भले ही वे अपनी ताकत की धौंस दिखाते रहें।

●● **के बॅले माँ तुमि अबले! :** पिछले महीने अप्रैल के पहले सप्ताह में राजधानी दिल्ली की सड़कों से लेकर जंतर-मंतर के परिसर तक जिस जागरूक जनशक्ति का दर्शन हुआ उसे देखकर राष्ट्रगीत 'वंदेमातरम्' की यह पंक्ति बरबस याद आ गयी—''कौन कहता है कि माँ तुम अबला हो?'' महात्मा गाँधी के पदचिह्नों पर चलते हुए जिस तरह एक अराजनीतिक जननेता श्री अन्ना हजारे ने अपने मुट्ठीभर साथियों के साथ सरकारी-तंत्र के भ्रष्टाचार के खिलाफ आमरण अनशन आरम्भ किया उसकी प्राथमिक उपेक्षा के बावजूद राष्ट्रीय-समर्थन और जनाक्रोश से सहमी हुई सर्वशक्तिमान सरकार को झुकना पड़ा। अंततः भ्रष्टाचार के खिलाफ प्रस्तावित लोकपाल-बिल का सर्वमान्य प्रारूप तैयार करने और उसे संसद की स्वीकृति के साथ संवैधानिक स्वरूप प्रदान करने की प्रक्रिया आरम्भ हुई। इस अनशन-अवधि के दरम्यान विभिन्न चैनलों पर जारी बहस-मुबाहसों में हिस्सा ले रहे विभिन्न विश्वविद्यालयों के प्रबुद्ध छात्रों, युवकों की बौद्धिक-चेतना, तर्कक्षमता एवं संवेदनशील जन-प्रतिबद्धता को देखकर विभिन्न पार्टियों के घोषित 'युवराजों' अथवा 'युवा-हृदय-सम्राटों' का प्रदर्शन-परक खोखलापन भी उजागर हो गया। समग्र राष्ट्रीय-परिदृश्य में उभरते इन नौजवान छात्रों, देश के प्रत्येक गाँवों-नगरों की बस्तियों से निकलते जन-गण—आबाल-वृद्ध नर-नारियों को देखकर खुद-ब-खुद गूँजने लगी ये पंक्तियाँ—

कोटि-कोटि भुजैर्धृत खर-करवाले
कोटि-कोटि कंठ कलकल-नाद कराले,
के बॅले माँ तुमि अबले!

—परागकुमार मोदी

पृष्ठ 4 का शेष

यूनेस्को प्रति वर्ष विश्व के किसी एक देश के एक शहर को यूनेस्को विश्व पुस्तक राजधानी का दर्जा प्रदान करता है। वह शहर उस विशेष वर्ष, जो 23 अप्रैल से अगले साल 22 अप्रैल तक होता है, में पुस्तक एवं पुस्तक से जुड़ी अनेकानेक गतिविधियाँ आयोजित करता है। इससे उस शहर विशेष के बहाने पूरे देश में पुस्तक संस्कृति का विकास होता है।

वर्तमान विश्व पुस्तक राजधानी स्लोवानिया का शहर लुबजाना है। अगला विश्व पुस्तक राजधानी ब्यूनस आयर्स (अर्जेंटीना) होगा। दिल्ली शहर को 2003 में विश्व पुस्तक राजधानी बनने का गौरव मिला था।

इधर हिन्दी नई चाल में ढल रही है

—कांति कुमार जैन

*हर कोई हिन्दी को लेकर चिन्तित है। हिन्दी क्षेत्र में कई विश्वविद्यालय और संस्थाएँ हैं। इन सबके बाद भी हिन्दी का समुचित विकास नहीं हो पा रहा है। इन कारणों और समाधान पर चर्चित संस्मरणकार **कांतिकुमार जैन** का आलेख :*

जब मैं पिछले दिनों की प्रसिद्ध फिल्म 'लगे रहो मुन्ना भाई' देखकर लौट रहा था तो मेरे 20 वर्षीय नाती ने अचानक मुझसे पूछा—नानाजी, मैंने कक्षा में गाँधीवाद के बारे में तो पढ़ा था, पर यह 'गाँधीगिरी', लगता है, कोई नई बात है। मुझे कहना पड़ा कि गाँधीगिरी बिल्कुल नई बात है और देश में बढ़ती हुई मर्यादाहीनता, धृष्टता, सैद्धान्तिक घपलेबाजी और वास्तविक प्रतिरोध न कर प्रतिरोध का स्वांग करने वालों को संवेदित करने जैसी चीज है। जिन शब्दों में 'गिरी' लग जाता है, वे कुछ हीनता व्यंजक अर्थ देने लगते हैं। जैसे—बाबूगिरी, चमचागिरी, गुण्डागिरी। मुझे भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के उस कथन की भी याद आई, जिसमें उन्होंने घोषित किया था कि **हिन्दी नई चाल में ढली**। अंग्रेज भारत में धर्म, ध्वजा और धुरी के साथ आये थे। इन तीनों का प्रभाव हिन्दी के स्वरूप पर भी पड़ा था। धर्म के प्रचार के लिए उन्होंने बाइबिल का अनुवाद किया और उसे मुद्रण यन्त्रों से छपवाकर जनता के बीच वितरित किया, ध्वजा के लिए उन्होंने प्रशासन तंत्र तैयार किया और धुरी अर्थात् तराजू के लिए भारत में अंग्रेजी माल का नया बाजार विकसित किया। इन तीनों के साथ हिन्दी क्षेत्र में ढेरों अंग्रेजी शब्द आये जो आज तक प्रचलित हैं।

1947 में स्वतंत्रता के साथ ही हिन्दी पुन: नई चाल में ढली—लोकतंत्र, संविधान, विकास कार्य, शिक्षा का प्रचार-प्रसार, तकनीकी जैसे कारणों से हिन्दी व्यापक हुई, उसका शब्दकोश समृद्ध हुआ। नये-नये स्रोतों से आने वाले शब्द हिन्दीभाषी जनता की जुबान पर चढ़ गये। इन शब्दों में विदेशी शब्द थे, बोलियों के शब्द थे, गढ़े हुए शब्द थे। जनता अपनी बात कहने के लिए जिन शब्दों का प्रयोग करती है, उनकी कुण्डली नहीं पूछती। बस काम चलना चाहिए। वह तो भाषा के पण्डित हैं, जो शब्दों का कुलगोत्र आदि जानना चाहते हैं। जनता भाषा की सम्प्रेषणीयता को महत्त्वपूर्ण मानती है, जबकि पण्डित लोग भाषा की शुद्धता को महत्व देते हैं।

हिन्दी के स्वाभिमान का हल्ला मचाने वालों को आड़े हाथों लेते हुए निरालाजी ने एक बड़े पते की बात कही थी—हम हिन्दी के जितने दीवाने हैं, उतने जानकार नहीं। हिन्दी के शुद्धतावादी पण्डितों ने 'कुकुरमुत्ता' नामक कविता में प्रयुक्त **नवाब, गुलाब, हरामी, खानदानी** जैसे शब्दों पर एतराज जताया था। कहा था, इन शब्दों से हमारी हिन्दी भ्रष्ट होती है। इन शुद्धतावादी विचारकों का कहना है कि हिन्दी के साहित्यकारों को विदेशी शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। अब **सामंत, पाटिल, वर्णशंकर, कुलीन** कहने से हिन्दी के स्वाभिमान की रक्षा भले ही हो जाये, किन्तु व्यंग्य की धार भौंथरी होती है और सम्प्रेषणीयता भी बाधित होती है। हिन्दी के ये शुद्धतावादी पोषक **शहीद भगतसिंह** को **बलिदानी भगतसिंह** कहना चाहते हैं। उनका बस चले तो वे **भगत सिंह** को **भक्त सिंह** बना दें। वे **फीसदी** को गलत मानते हैं, उन्हें **प्रतिशत** ही मान्य है। वे राशन कार्ड, कचहरी, कार, ड्राइवर, फिल्म, मेटिनी, कम्प्यूटर, बैंक, टिकट जैसे शब्दों के भी विरोधी हैं। वही है हिन्दी का स्वाभिमान। यह झूठा स्वाभिमान हिन्दी के विकास में सबसे बड़ी बाधा है। ऐसे लोग हिन्दी को आगे नहीं बढ़ने देना चाहते। वे वस्तुत: जीवन की प्रगति के ही विरोधी हैं।

एक बार पण्डित शान्तिप्रिय द्विवेदी जबलपुर आये थे। पण्डित भवानीप्रसाद तिवारी उन दिनों वहाँ के मेयर थे, स्वयं कवि, गीतांजलि के अनुगायक। उन्होंने शान्तिप्रिय जी के सम्मान में एक कवि गोष्ठी का आयोजन किया। अपनी कविताएँ भी सुनाईं। उनकी एक काव्य पंक्ति है—''कैसी मुश्किल कर दी तुमने, कितनी रूप माधुरी प्राणों में भर दी।'' शान्तिप्रिय जी का हिन्दी प्रेम जागा, उन्होंने शिकायत की, बाकी सब तो ठीक है, यह मुश्किल शब्द विदेशी है। इसे यहाँ नहीं होना चाहिए। भवानी प्रसादजी तो अतिथिवत्सल और शालीन थे, वे कुछ नहीं बोले, पर जीवनलाल वर्मा 'विद्रोही' जो स्वयं बहुत अच्छे कवि और व्यंग्यकार थे बिफर गये। बोले—'मुश्किल' से आसान शब्द आप हिन्दी में बता दें तो मैं अपना नाम बदल दूँ। पण्डित शान्तिप्रिय द्विवेदी जैसे विद्वान जीवन की प्रगति से ज्यादा भाषा की शुद्धता के हिमायती हैं।

जीवन जब आगे बढ़ता है तो वह अपनी आवश्यकता के अनुरूप नये शब्द दूसरी भाषाओं से उधार लेता है, नये शब्द गढ़ता है, लोक की शब्द सम्पदा को खंगालता है और अपने को सम्प्रेषणीय बनाता है। मेरे एक मित्र हैं, मोबाइल रखते हैं पर मोबाइल शब्द का प्रयोग उन्हें पसन्द नहीं है। मोबाइल को वे चलित वार्ता कहते हैं। जब वे आपसे आपकी चलित वार्ता का क्रमांक पूछते हैं तो आप भौचक्के रह जाने के अलावा कुछ नहीं कर सकते। ऐसे शुद्धतावादी हर युग में हुए हैं और हास्यास्पद माने जाते रहे हैं। मध्यकाल के उस फारसीदां का किस्सा आज भी लोगों द्वारा दुहराया जाता है, जब वे अपने नौकरों से आब-आब की माँग करते रहे थे। पानी उनके सिरहाने ही रखा था। सो जब कोई दीवाना मोबाइल को अछूत समझता है या पानी से परहेज करता है तो न वह भाषा का मित्र है, न ही अपने जीवन का। ऐसे विद्वानों को मेरे मित्र अनिल वाजपेयी 'अनसुधरे बल' कहते हैं। हिन्दी तो बराबर स्वयं को सुधारती चलती है, पर ये विद्वान लकीर पीटने में ही मगन रहते हैं।

हिन्दी के एक विख्यात समीक्षक को *दबिश* जैसे शब्दों से परहेज है। वे समझते हैं कि दबिश अंग्रेजी के *फूलिश* या *रबिश* का कोई भाईबंद है। यदि उन्होंने हिन्दी के ही *दबना, दबाना, दाब, दबैल* जैसे शब्दों को याद कर लिया होता तो वे *दबिश* के प्रयोग पर आपत्ति नहीं करते। कचहरी, पुलिस, कानून व्यवस्था, थाना आदि से सम्पर्क में आने वाले *दबिश* से अपरिचित नहीं है। वस्तुत: हिन्दी के दीवाने जीवन से अपने शब्दों का चयन नहीं करते, हिन्दी के शब्दकोशों से करते हैं। हिन्दी के शब्दकोशों के सहारे हम आज के लोकतांत्रिक भारत के जीवन—राजनीतिक व्यर्थताओं, सामाजिक विसंगतियों, आर्थिक उलझनों और सांस्कृतिक प्रदूषण को पूरी तरह और सही-सही समझ ही नहीं सकते। हिन्दी के शब्दकोशों में न तो *सुपारी* जैसा शब्द है, न *अगवा, हफ्ता, फिरौती, बिंदास, ढिसुम, घोटाला, कालगर्ल, ब्रेक* जैसे शब्द। आप हर दिन समाचार पत्रों, पुस्तकों, जन सम्प्रेषण माध्यमों, बोलचाल में ये शब्द सुनते हैं और समझते हैं, पर इन्हें अभी तक हमारे कोशकारों ने पांक्तेय मानकर शब्दकोशों में स्थान नहीं दिया। हमारे शब्दकोश जीवन से कम से कम पचास साल पीछे हैं।

हिन्दी में समस्या नये विदेशी शब्दों को स्वीकृत करने की तो है ही, उन शब्दों को भी अंगीकार करने की है जो हिन्दी की बोलियों में प्रचलित हैं। हिन्दी के साहित्यकार विभिन्न बोली क्षेत्रों से आते हैं। वे जब हिन्दी में अपने क्षेत्रों के अनुभवों और परिवेश की कथा लिखेंगे तो वहाँ के शब्दों के बिना उनका काम नहीं चलेगा। हिन्दी सदैव से एक उदार और ग्रहणशील भाषा रही है। जब रामचन्द्र शुक्ल ने कबीर की भाषा को सधुक्कड़ी कहा तो वे हिन्दी की इसी व्यापक ग्रहणशीलता को रेखांकित कर रहे थे। साधु किसी एक स्थान पर जमकर नहीं रहता, घूमना-फिरना, नये-नये क्षेत्रों में जाना उसकी सहजवृत्ति है। इसी कारण हमारे मध्यकालीन संत कवियों में नाना बोली क्षेत्रों के शब्द मिल जायेंगे। हिन्दी कविता का अधिकांश तो हिन्दी की बोलियों में ही है। तुलसी, जायसी जैसे कवियों ने अपनी बोली के शब्दों से अपने काव्य को समृद्ध किया है। जायसी जब *सैनिक* के लिए *पाजी*, तुलसी जब *सुपात्र* के लिए *लायक*, कबीर जब *समीप* के लिए *नाल* का प्रयोग

करते हैं तो वे हिन्दी की विशाल रिक्थ सम्पदा का दोहन करते हैं। नये युग में भी गुलेरी ने **उसने कहा था** में 'कुड़माई' जैसे शब्द का प्रयोग कर उसे हिन्दी पाठकों का परिचित बना दिया। कृष्णा सोबती **डार से बिछुड़ी** लिखकर पंजाबी 'डार' को जो समूह वाली है, हिन्दी का शब्द बनाने में संकोच नहीं करतीं। **मैला आंचल, जिन्दगीनामा, कसप, डूब चाक** जैसे उपन्यासों की रोचकता केवल कथा को लेकर ही नहीं, उसकी भाषा की अभिव्यक्ति क्षमता को लेकर भी है।

कुछ दिनों पहिले हिन्दी के एक समीक्षक ने **मैला आंचल** की हिन्दी को अपभ्रष्ट कहकर उसका परिनिष्ठित हिन्दी में अनुवाद करने का सुझाव दिया था। इधर हिन्दी की बोलियों को स्वतंत्र भाषा के रूप में स्वीकृत किये जाने की माँग बढ़ रही है। यदि अवधी को हिन्दी से पृथक भाषा मान लिया जायेगा, तब क्या **रामचरित मानस** का हिन्दी अनुवाद करना पड़ेगा, हजारी प्रसाद द्विवेदी के उपन्यासों को भोजपुरी में रूपान्तरित करने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी? नामवर सिंह तब हिन्दी के नहीं, भोजपुरी के साहित्यकार माने जायेंगे। इधर मेरे पास बुंदेली प्रेमियों के बहुत से पत्र आ रहे हैं जिनमें आग्रह किया जा रहा है कि मैं अपनी मातृभाषा के रूप में हिन्दी को नहीं, बुंदेली को जनगणना पत्रक में दर्ज करवाऊँ। यह एक संकीर्ण विचार है। इससे हिन्दी बिखर जाएगी और हिन्दी का अस्तित्व ही खतरे में पड़ जाएगा। एक ओर तो विभिन्न दूरदर्शन चैनलों में दिखाए जाने वाले धारावाहिकों में **बींद** और **बींदड़ी** जैसे ठेठ क्षेत्रीय शब्द लोकप्रिय हो रहे हैं, दूसरी ओर हिन्दी की एल०ओ०सी० को और संकीर्ण बनाया जा रहा है।

राजनीति में छोटी-छोटी पार्टियाँ बनाकर सत्ता में भागीदारी के अवसर निकालना जबसे सम्भव हुआ है, तबसे हिन्दी की बोलियों के पृथक अस्तित्व की माँग करना भी लाभप्रद और सुविधाजनक हो गया है। छोटी राजनीतिक पार्टियों ने हमारे लोकतंत्र को अस्थिर और सिद्धान्तविहीन बना दिया है, छोटी-छोटी बोलियों की पृथक पहचान का आग्रह करने वाले हिन्दी के गढ़ में सेंध लगा रहे हैं। हमें उनका विरोध करना चाहिए, उनसे सावधान रहना चाहिए।

हमें हिन्दी को अद्यतन बनाने के लिए जिन बातों की ओर ध्यान देना चाहिए, उन बातों की ओर किसी का ध्यान नहीं है। हमारे विश्वविद्यालयों, हिन्दी सेवी संस्थाओं, हिन्दी के प्रतिष्ठानों के पास ऐसी कोई योजना नहीं है कि हिन्दी में आने वाले नये शब्दों का संरक्षण, अर्थ विवेचन और प्रयोग का नियमन किया जा सके। **पिछड़ी** का विरोधी शब्द **अगड़ी** हिन्दी में इन दिनों आम है, पर **अगड़ी** का शब्दकोशीय अर्थ **अर्गला** या **अड़ंगा** है। अंग्रेजी की एक अभिव्यक्ति है एफ०आई०आर० अर्थात् फर्स्ट इनफार्मेशन रिपोर्ट। हिन्दी में इसे प्रथम दृष्टया प्रतिवेदन कहते हैं या प्राथमिकी। हिन्दी शब्दकोशों में ये दोनों नहीं हैं। यह शब्द विधि-व्यवस्था का, अपराध जगत का, जनसंचार माध्यमों का बहुप्रयुक्त शब्द है। दादा, धौंस, घपला, घोटाला, कबूतरबाजी, हिट जैसे लोक प्रचलित शब्द भी हमारे शब्दकोशों में नहीं हैं। दूरदर्शन देखनेवालों को घण्टे-आधघण्टे में **ब्रेक** शब्द का सामना करना पड़ता है। पर **ब्रेक** को अभी शब्दकोशों में **ब्रेक** नहीं मिला है। और तो और **बाहुबली** का नया अर्थ भी हमारे शब्दकोशों में दर्ज नहीं है।

अंग्रेजी में हर दस साल बाद शब्द कोशों के नये संस्करण प्रकाशित करने की परम्परा है। वैयाकरणों, समाजशास्त्रियों, मीडिया विशेषज्ञों, पत्रकारों, मनोवैज्ञानिकों का एक दल निरन्तर अंग्रेजी में प्रयुक्त होने वाले नये शब्दों की टोह लेता रहता है। यही कारण है कि पण्डित, आत्मा, कच्चा, झुग्गी, समोसा, दोसा, योग जैसे शब्द अंग्रेजी के शब्दकोशों की शोभा बढ़ा रहे हैं। अंग्रेजी में कोई शुद्ध अंग्रेजी की बात नहीं करता। सम्प्रेषणीय अंग्रेजी की, अच्छी अंग्रेजी की बात करता है। अंग्रेजी भाषा की विश्वव्यापी ग्राह्यता का यही कारण है कि वह निरन्तर नये शब्दों का स्वागत करने में संकोच नहीं करती। हाल ही में आक्सफोर्ड एडवांस्ड लर्नर्स डिक्शनरी का नया संस्करण जारी हुआ है। इसमें विश्व की विभिन्न भाषाओं के करीब तीन हजार शब्द शामिल किये गये हैं। बन्दोबस्त, बनिया, जंगली, गोदाम जैसे ठेठ भारतीय भाषाओं के शब्द हैं, पर वे अंग्रेजी के शब्दकोश में हैं क्योंकि अंग्रेजीभाषी उनका प्रयोग करते हैं।

हिन्दी क्षेत्र में इतने विश्वविद्यालय हैं, हिन्दी का प्रचार-प्रसार करने वाली इतनी संस्थाएँ हैं, क्या कोई ऐसी योजना नहीं बन सकती कि हिन्दी में प्रयुक्त होने वाले नये शब्दों को रिकार्ड किया जा सके। हम प्रत्येक दस वर्ष में जनगणना पर करोड़ों रुपये खर्च करते हैं, क्या हिन्दी की शब्द गणना पर कुछ खर्च नहीं किया जा सकता? कोई हिन्दी समाचार-पत्र अपने रविवासरीय संस्करण में पाठकों से आमंत्रित कर प्रत्येक सप्ताह उसके क्षेत्र में प्रचलित हिन्दी के सौ नये शब्द भी प्रकाशित करे तो वर्ष भर में 5000 से भी अधिक शब्द समेटे जा सकते हैं। वैश्विकीकरण के साथ, नई उपभोक्ता वस्तुओं के साथ, नये मनोरंजनों के साथ, लोकतंत्र की नई-नई व्यवस्थाओं के साथ जो सैकड़ों शब्द हिन्दी में आ रहे हैं, उन्हें काल की आँधी में उड़ जाने देना गैर जिम्मेदारी भी है और लापरवाही भी। वह हिन्दी के प्रति हमारी संवेदनविहीनता का द्योतक तो है ही। **हमें आज हिन्दी के शुद्धतावादी दीवाने नहीं, हिन्दी के संवेदनशील जानकार चाहिए।**

विश्व पुस्तक एवं कॉपीराइट दिवस
कब, क्यों और कैसे

प्रत्येक वर्ष 23 अप्रैल को विश्व पुस्तक एवं कॉपीराइट दिवस मनाया जाता है। इसे अन्तरराष्ट्रीय पुस्तक दिवस या केवल पुस्तक दिवस भी कहते हैं। संयुक्त राष्ट्र के शैक्षिक संगठन, यूनेस्को (UNESCO) द्वारा पठन एवं प्रकाशन के प्रोन्नयन एवं बौद्धिक सम्पदा को कॉपीराइट (प्रतिलिप्यधिकार) के द्वारा संरक्षण प्रदान करने के उद्देश्य से यह दिवस मनाया जाता है। यह दिवस यूनेस्को के निर्णय के आलोक में पहली बार 1995 में मनाया गया।

आखिर 23 अप्रैल को ही पुस्तक दिवस के रूप में क्यों मनाया जाता है? इसके पीछे कुछ साहित्यिक कारण हैं। 23 अप्रैल को पुस्तक के साथ पहला सम्पर्क स्पेन में 1923 में देखने को मिला, जब वहाँ के पुस्तक विक्रेताओं ने प्रख्यात स्पेनिश लेखक मिगुएल डी सरवांटेज, डॉन क्विक्जोट उपन्यास के रचनाकार को सम्मान देने के लिए इस दिवस को चुना। सरवांटेज का इसी दिन 1616 ई० में निधन हो गया था। वैसे, यह सेंट जॉर्ज दिवस (यह भी 23 अप्रैल को) समारोह का भी एक अवसर है। मध्यकालीन समय में कैटालोनिया में यह परम्परा थी कि 23 अप्रैल को पुरुष अपनी प्रेमिकाओं को गुलाब उपहार में देते थे और बदले में प्रेमिकाएँ उन्हें पुस्तकें देती थीं।

23 अप्रैल विश्व साहित्य की दुनिया में कई अन्य ख्यात-प्रख्यात लेखकों के जन्म व निधन की तिथि के रूप में भी चर्चित है। यह प्रख्यात लेखक विलियम शेक्सपियर के जन्म व मृत्यु की भी तिथि है, साथ ही इन्का गार्सिलासो डी ला वेगा एवं जोसेप प्ला का निधन भी इसी दिन हुआ। मॉरीस द्रुओं, व्लादिमीर नाबोकोव, मैनुएल मेजिआ वलेजो एवं हॉलदॉर लैक्सनेस जैसे कई अन्य लेखकों का जन्म दिवस भी है यह तिथि।

वैसे, 23 अप्रैल को शेक्सपियर एवं सरवांटेज के निधन की तिथि को लेकर कुछ मतभेद भी हैं। सरवांटेज की 23 अप्रैल को मृत्यु ग्रिगोरियन कैलेण्डर के अनुसार मानी जाती है, जबकि उस समय इंग्लैण्ड में जुलियन कैलेण्डर का प्रचलन था। शेक्सपियर का निधन 23 अप्रैल को जुलियन कैलेण्डर के अनुसार हुआ माना जाता है। इस तरह, शेक्सपियर की मृत्यु सरवांटेज की मृत्यु से 10 दिन बाद हुई। इन गफलतों के बावजूद यूनेस्को ने कई कारणों से 23 अप्रैल को ही विश्व पुस्तक दिवस के रूप में मान्य किया। यूनेस्को की आम सभा द्वारा पुस्तक एवं लेखकों को इस दिवस पर याद करने तथा आम लोगों, विशेषकर युवाओं में पुस्तक पठन को आनन्द के रूप में लेने को प्रोत्साहित करने का उद्देश्य भी इस दिवस को पुस्तक दिवस के रूप में मनाने का कारण बना। *शेष पृष्ठ 2 पर*

पुरइन-पात

भोजपुरी साहित्य से एक चयन

सम्पादक : डॉ० अरुणेश नीरन व डॉ० चितरंजन मिश्र

अमवा के नाईं बाबू बउरैं
महुअवा कुचलागैं
पुरइन-पात-अस पसरैं
कमल-अस बिहँसैं।

भोजपुरिया मन में पसरने की कल्पना 'पुरइन पात' की तरह है—जल में, जल पर, जल से परे, जल पर थल रचते हुए, ऐसा थल जिस पर जल की बूँदें आँसुओं की तरह ढुलक पड़ती हैं या नभ के तारे की तरह जगमगाती हैं। सम्पादक-द्वय ने इस ऐसे पसरने के भोजपुरी मन को बड़े मन से सामने करने की कोशिश की है।

आकार डिमाई | *पृष्ठ* 220

सजिल्द : 81-7124-304-5 • रु० 200.00

(पुस्तक के एक अध्याय का अंश)

इमला के बीया

लइकाई के एक ठे बात मन परेला त एक ओर हँसी आवेला आ दूसरे ओर मन उदास हो जाला। अब त शायद ई बात कवनो सपना लेखा बुझाय कि गाँवन में जजमानी के अइसन पक्का व्यवस्था रहे कि एक जाति के दूसर जाति से सम्बंध ऊँच-नीच प कायम ना रहे, रुपया-पइसा के लेन-देन पर ना—ओ व्यवस्था में सबकर सब प हक रहे आ केहू ओ में दखल ना दे सकै। बियाहे में, जनेवे में बाँसे के छितनी, बाँसे क डाल बनावे वाला धरिकार बसें। ओनहन के जजमानी बँटल रहै। जवन गाँव ओनकै जजमानी के रहै ऊ गाँव उनुकर गाँव हो जाय, ओही किसिम के मिल्कियत ऊ मानैं। एक बेर अइसन भयल कि हमरे गाँव के जजमानी वाला धरिकार हमरे लग आयल। बोलल कि बाबू एक ठे कागज बनाय दे, हम ई गाँव पाँच बरिस खातिर बन्धक रखल चाहऽतानी; पाँच रुपया में। हमरा बड़ा किरोध आइल कि ई कवन गाँव के बंधक रखे वाला! त बोलल कि बाबू गाँव पर सबकर आपन हक होला, हम आपन हकवे नू बंधक राखऽतानी, दोसर आपन हक रखो, हमके कवनो गुरेज नाई बा। खैर कागज बना देहनी, ऊ गाँव बन्हकी रखलैं, कब छोड़वलैं भगवान जानैं। तब त हँसी आइल, आज सोचींले त मन उदास हो जाला कि का हम अपने गाँव प ओ हक के दावा क सकींले? जवने गाँव में पैदा भइलीं, जवने गाँव के पानी पियलीं, जवने गाँव के बयार साँसे में भरल, जवने के धूर-माटी में बड़ भइलीं, जवने के आमे के बगइचा में जेठ के लहकारत लुक्कड़ के कुच्छ नाहीं बुझलीं, ओह गाँव के का हम आपन कह सकींले? बरिस क बरिस बीत जाला ओ गाँव में जाय के मौका न लागेला। कइसे कहीं ऊ गाँव हमार ह आ ईहो कइसे कहीं कि ऊ गाँव हमार ना ह। ओ गाँव के लोगन के जवन प्यार-दुलार-आदर मिलल बा—कइसे कहीं कि ऊहे प्यार-दुलार-आदर हम ना हई।

राप्ती नदी के कछार में बसल गाँव, नगीच से नगीच सड़क—तीन कोस, आज काल्ह के नाप-जोख में 10 कि०मी० लामे, नगीच से नगीच रेलवे स्टेशन—पाँच कोस माने लगभग सोरह किलोमीटर लामे, गाँव के पछिम ओर एक कोस प राप्ती नदी आ पुरुब ओर एतने दूरी पर गोर्रा, राप्तिए नदी से निकलल एक ठो शाखा। बाढ़ आवे त दूनो नदिया एक हो जाय। अपने गाँव के गैंड़ा नाव लागे, ऊहे सड़क ले चलि जाय। बाग-बगइचा सब पानी में डूबि जाय, बाढ़ि निकल जाय त अइसन पानी खेतन में आवे कि खाद दिहले के जरूरते ना रहि जाय। ऊपरे ऊपरे अनाज छींट दें त ऊ छतियाफार उपजे। बाढ़ तब एक साल आँतर देके आवे। जवना साल ना आवे तवने साल रहर अइसन उपजे कि ओ में गाइ-भैंइस त लुकाइए जाय, छोट-मोट हथियो लुका जाय। कछारा में रहरी-रहरी आदमी कोसन चल जाय, पते ना लागे। गाँव के पुरुब ओर आमे के बगइचा रहल। सबसे छोर प हमरे घर के बाग रहल। सज्जी बिज्जू आम रहल आ बड़ा पुरान। चिनियवा आम फरे त गाड़ी के गाड़ी आमे आम, करियवा में आम कम आवे, बड़ा मोट ओकर छिलका रहे बाकिर रस बड़ा रहे। जरलहवा आम बड़वर रहे, आधा बिजली लगले से झुराइल रहे आ ओकरे नाते ओकर अजबे सवाद रहे। मिठवा गोपुली एक जड़ में दू आम रहल। एक ठो आम रहल जवन कच्चे मीठ रहे आ पाके त ओमें कीड़ा पर जाय आ एक ठो मुदियवा आम रहे, छोटे छोट होखे आ कठेसे होखे बाकिर बहुते मीठ। कवनो के सवाद दोसरे के सवाद से ना मिले। गाँवो के ईहे हिसाब रहे। केहू के गुण दोसरे में ना मिले, गुण अलगे, चेहरो अलग, सुभावो अलगे, चलियो अलगे। ओ बगइचा के बीच में एगो पीपरे के पेड़ रहे। ओके घंटहवा पीपर कहल जाय आ ओके नीचे जात के लरिका सब डेरायँ। ओही बगइचा से होके प्राइमरी स्कूल दोसरे गाँव में रहे। ओके बीचे मरगा नाला रहे, बाढ़ में उहे नदी हो जाय। कम पानी रहे त केकरो कान्हे प ना त लकड़ी जोड़ के नाय बना के पार कइल जाय। पता ना कहाँ के जलकुंभी आ गइल कि सुखा गइल ना त तनी-मनी पानी गर्मियो में रहे। ओही मरगवा के सटले तीन-तीन गाँव रहे। दखिन सीवान प गोपलापुर, पछिम सीवान प दुलारी आ कोनाहे पछिम-उत्तर दीवाँ आ दक्खिन के ओर कोनाहे डुमरी।

हमार गाँव सबके बीच में रहे आ सबसे तनी ऊँचो रहे। हमरे गाँव में सबसे नीमन बात ई रहे कि सब जाति आ व्यवसाय के लोग रहल। पाँच घर बढ़ई, चार घर लोहार, चार घर नाऊ, पाँच घर दखिनहवा चमार, एक घर चमड़ा क काम वाला चमार, तीन घर तेली, पाँच घर कलवार, तीन घर कोंहार, तीन घर माली, दू घर लाला, दू घर सकलदीपी बाम्हन, एक घर पुरोहित, सबसे ढेर घर अहीरन के, मलाहन के आ मुड़ेरी लोगन के। मुड़ेरी लोग अधिकतर बंगाल में, असम में नाय चलावे, तिजारती बड़की-बड़की नाय। होली के अरीब-गरीब घरे आवें आ जतना दिन गर्मी रहे ओतना दिन ओनहन के बंगाल, असाम के जादू के खीसा गाँव के बयारि में लहरात रहै। उनके घर में मेहरारू कुटनी-पिसनी के काम करैं। ओ में से एक मेहरारू आन्हर रहल। हमरी घरे आवे आ चाकी प दाल दरैं, पिसान पीसे आ कबो-कबो हमन के कथो-कहनी सुनावे। बिना केकरो मदद के ऊ चलि आवे। हमरे घरे हरवाह मलाह रहत रहलन भा चमार रहलन बाकी सिलवाह त सुखई रहले, उनके पहिले उनके बाप रहले दुल्हर। सुखई काका के बड़ी रोब रहे। ऊ बाहर के बखार से महीने-महीने खोराकी में आनाज लें आ बड़ा अधिकार से हिसाब माँगे। हमरे घर के पिछवारे बढ़ई के घर रहे। ओ में से हरवंस हमरा साथ पढ़तो रहले। पछिम ओर कोंहारे के घर रहल ओ में से रघुनन्दन कोंहार हमरा साथे रहले। उत्तर के घर सुन्नर लोहार के रहल। ओ घर के मटेल्हू के माई के हमरे घर में बड़ा दखल रहे। हर काज परोजन में ऊहें पतुकी, घइली, कोसा, कसरा बना के दें। दिया-दियारी में दिया बना के दें हमहन के, माटी के जाँता-जाँती आ छोट-मोट गाड़ी बना के दें आ खूब लड़ें। बियाहे-उयाहे में मड़वा में हाथी रखाय। ओ पे कलसा रखाय। अपना पतोह के आगे क के ऊ जब हाथी कलसा ले के आवें त ओके परिछन होवे आ ओ परिछन में ओके नखरा देखे लायक रहे।

हमरे घरे के उत्तर ओर बिरजू अहीर के भाई बंद रहैं। एक कोना में सरनाम-बिसराम रहले। ओकरा सटले मलाहे के घर रहे।...

प्राप्ति स्थान

विश्वविद्यालय प्रकाशन ,चौक, वाराणसी
www.vvpbooks.com

स्मृति-शेष

प्रसिद्ध साहित्यकार आचार्य जानकी वल्लभ शास्त्री नहीं रहे

7 अप्रैल को सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं कवि आचार्य जानकी वल्लभ शास्त्री का मुजफ्फरपुर में निधन हो गया। वे 96 वर्ष के थे। श्री शास्त्री पिछले दो महीनों से बीमार चल रहे थे। उनकी कई कविताएँ अनेक विश्वविद्यालयों में हिन्दी पाठ्यक्रम में पढ़ाई जाती हैं। भारत सरकार ने उन्हें पद्म विभूषण तथा पद्मश्री पुरस्कारों से सम्मानित किया। उन्होंने 1994 में पद्मश्री पुरस्कार वापस कर दिया था। आचार्य शास्त्री का जन्म गया जिले के मैगरा गाँव में हुआ था। उनकी जितनी पकड़ कविता के क्षेत्र में थी, उतनी ही ललित निबन्ध, कहानी, नाटक, आत्मकथा, गजल और गीत के क्षेत्र में भी थी। आचार्य की प्रसिद्ध पुस्तकों में 'काकली', महाकाव्य 'राधा' (सात खण्डों में), 'मेघगीत', 'गाथा', 'तमसा' आदि प्रमुख हैं।

समालोचक चंद्रबली सिंह नहीं रहे

वाराणसी। विगत 23 मई को हिन्दी के मूर्धन्य समालोचक डॉ० चंद्रबली सिंह का निधन हो गया। वह 87 वर्ष के थे। उनका जन्म गाजीपुर के रानीपुर कस्बे में 20 अप्रैल 1924 को हुआ था। शिक्षा-दीक्षा गाजीपुर के अलावा बलिया और बनारस में हुई थी।

डॉ० सिंह देश के प्रमुख लेखक संगठन जनवादी लेखक संघ के संस्थापक महासचिव थे। उन्होंने 1956 में प्रकाशित पहली आलोचना-कृति 'लोकदृष्टि और हिन्दी साहित्य' से आलोचकीय यात्रा शुरू की। उनकी गणना आलोचना को जनपक्षीय व वैज्ञानिक विश्लेषण का आयाम देने वाले समालोचकों में होती है। वह हिन्दी के विख्यात समालोचक डॉ० रामविलास शर्मा के आगरा में सहकर्मी और अंतरंग रह चुके थे। डॉ० शर्मा ने अपनी विश्वप्रसिद्ध कृति 'राष्ट्रीय आन्दोलन और हिन्दी साहित्य' भावपूर्ण टिप्पणी के साथ डॉ० सिंह को ही समर्पित की थी। उन्होंने पाब्लो नेरुदा, ब्रेख्त, नाजिम हिकमत, वाल्ट ह्विटमैन आदि की रचनाओं का अनुवाद किया है जो साहित्य के प्रति उनका अप्रतिम योगदान है।

श्यामा बेरी का निधन

हिन्दी प्रकाशन जगत के पुरोधा एवं हिन्दी प्रचारक संस्थान के संस्थापक स्व० श्री कृष्णचन्द्र बेरी की धर्मपत्नी श्रीमती श्यामा बेरी का 9 अप्रैल को उनके पिशाचमोचन आवास पर सायं साढ़े चार बजे निधन हो गया। वह 87 वर्ष की थीं।

साहित्यकार श्री कमला प्रसाद का निधन

25 मार्च को वरिष्ठ साहित्यकार एवं आलोचक श्री कमलाप्रसाद का नई दिल्ली के एक अस्पताल में निधन हो गया। वे 74 वर्ष के थे। वह मध्य प्रदेश से प्रकाशित साहित्यिक पत्रिका 'वसुधा' के सम्पादक और प्रगतिशील लेखक संघ के राष्ट्रीय महासचिव थे। मध्य प्रदेश के सतना जिले के गाँव धौरहरा में 1938 में जनमे श्री प्रसाद की प्रमुख कृतियाँ 'साहित्य शास्त्र', 'आधुनिक हिन्दी कविता', 'आलोचना की द्वंद्वात्मकता', 'रचना की कर्मशाला', 'नवजागरण के अग्रदूत भारतेन्दु हरिश्चन्द्र' आदि हैं।

डॉ० व्रजसुंदर पाढ़ी का निधन

कटक/ओड़िशा स्थित 'हिन्दी शिक्षा समिति' एवं 'हिन्दी शिक्षक संघ' ओड़िशा के प्रतिस्थापक एवं मार्गदर्शक डॉ० व्रजसुंदर पाढ़ी हिन्दी एवं ओड़िया भाषा के बीच सर्वमान्य सम्पर्क-सेतु थे। हिन्दी में प्रकाशित मासिक पत्रिका 'वार्ता-वाहक' द्वारा हिन्दी-संसार को ओड़िया भाषा, समाज, साहित्य और संस्कृति से परिचित कराते हुए पिछले दिनों उन्होंने महाप्रयाण किया।

साहित्यकार श्री अशौक कौशिक नहीं रहे

6 अप्रैल को दिल्ली के प्रसिद्ध हिन्दी साहित्यकार श्री अशोक कौशिक का निधन हो गया। उनका जन्म 10 अगस्त, 1926 को अल्मोड़ा में हुआ था। उन्होंने विभिन्न विधाओं में लगभग 200 पुस्तकें लिखीं। वे अनेक संस्थाओं से जुड़े रहे तथा अनेक पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादन किया। गुरुदत्त, सावरकर, कालिदास आदि की रचनावलियाँ सम्पादित कीं और अनुवाद किए। उन्होंने अपना शरीर दधीचि की तरह दान कर दिया।

हमारी विनम्र श्रद्धांजलि

अल्प अवधि में हिन्दी भाषा की विविध जानकारियों सहित सुधी पाठकों के समक्ष पहुँचता 'भारतीय वाङ्मय' सचमुच हिन्दी दूत प्रतीत होता है। पुण्य श्लोक पं० पुरुषोत्तमदासजी मोदी की सदिच्छानुसार साहित्यिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक सरोकारों से सम्बद्ध इस पत्रिका की बारह वर्षीय यात्रा भी अनूठी है।

जिन दिनों मार्च-अप्रैल 2011 अंक प्रेस में था लगभग सजग ज्योतिषी की भाँति आपने जैतापुर का जो खाका सम्पादकीय में खींचा वह प्रत्यक्ष रूप से घटित हो रहा था। आपकी राष्ट्र भाषा की नि:स्वार्थ सेवा सर्वथा सराहनीय है।

—मोतीलाल जैन 'विजय',
कटनी, मध्यप्रदेश

अत्र-तत्र-सर्वत्र

द पीपुल ऑफ आस्ट्रेलिया हिन्दी में

भारतीय समुदाय को आकर्षित करने के प्रयासों के तहत आस्ट्रेलियाई सरकार ने घोषणा की है कि उसकी बहुसांस्कृतिक नीति द पीपुल ऑफ आस्ट्रेलिया का हिन्दी में अनुवाद किया गया है। यह अब ऑनलाइन उपलब्ध होगी।

सप्रे संग्रहालय को मिली दुर्लभ सम्पदा

एक प्रकाशित समाचार के अनुसार इस साल के पहले तीन महीनों में माधवराव सप्रे स्मृति समाचार-पत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान, भोपाल को वरिष्ठ साहित्यकारों तथा पत्रकारों की दुर्लभ सम्पदा हासिल हुई है। सप्रे संग्रहालय के संस्थापक एवं संयोजक श्रीधर के अनुसार भवानीप्रसाद मिश्र की हस्तलिखित डायरियाँ और साहित्य के पुरोधा डॉ० धर्मवीर भारती की विशाल निजी लाइब्रेरी उनके परिजनों ने वर्तमान और भावी पीढ़ियों के ज्ञान लाभ के लिए सप्रे संग्रहालय को सौंप दी है। 1928-29 से स्वाधीनता संग्राम में अलख जगाने वाली प्रभात फेरियों में भाग लेने और 1930 से कविता लिख रहे मिश्र की डायरियाँ लगभग 55 वर्ष का साहित्यिक दस्तावेज होने के साथ-साथ राजनीतिक दस्तावेज भी हैं।

स्पेलिंग के भारतीय बाजीगर ने बनाया गिनीज रिकॉर्ड

अंग्रेजी की यह स्पेलिंग देखिये, hippopotmonstrosesquipedaliophobia 35 अक्षरों वाले इस शब्द का अर्थ है, लम्बे शब्दों के प्रति डर। यह स्पेलिंग याद करना किसी के लिए भी टेढ़ा काम हो सकता है, लेकिन बेंगलूर के शिशिर हथवार के लिए स्पेलिंग से बाजीगरी बाएँ हाथ का खेल है। उन्हें ऐसे लम्बे स्पेलिंग को उल्टा याद करने और बोलने में महारथ हासिल है।

हथवार ने पिछले हफ्ते मात्र 1 मिनट 22.53 सेकण्ड में पचास जटिल स्पेलिंग फर्राटे से उल्टे बता कर विश्व रिकॉर्ड रच दिया। 'फास्टेस्ट बैकवर्ड्स स्पेलिंग ऑफ 50 वर्ड्स' करिश्मे के लिए उनका नाम गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज किया गया है।

डॉ० विश्वनाथ प्रसाद तिवारी साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष निर्वाचित

श्री सुतिंदर सिंह नूर के निधन के पश्चात् साहित्य अकादेमी में उपाध्यक्ष का पद खाली हुआ था, जिसके लिए 30 अप्रैल, 2011 को गुवाहाटी में सामान्य परिषद् की बैठक में प्रख्यात कवि-समालोचक और सम्पादक डॉ० विश्वनाथ तिवारी को बहुमत से उपाध्यक्ष चुना गया। डॉ० तिवारी 'दस्तावेज' के सम्पादक हैं, उन्हें हाल ही में बिड़ला फाउण्डेशन का प्रतिष्ठित 'व्यास सम्मान' देने की घोषणा की गई है।

हंस (आत्मकथा अंक)

प्रेमचंद

1932 ई० में प्रकाशित **हंस** का यह विशेषांक 'आत्मकथा अंक' दशकों से अप्राप्य था। पाठक ऐसे ही स्तरीय, विलुप्त हो चले, पठनीय साहित्य की तलाश में हैं। वर्तमान समय में इस ग्रन्थ की उपादेयता कहीं अधिक बढ़ जाती है। आज पाठकों, अध्येताओं की बहुप्रतीक्षित उत्कट अभिलाषा पूर्ण हो रही है। आज हम यत्र-तत्र आत्मकथा और संस्मरणों का जो दौर देखते हैं उसका जनक था **हंस** का यह 'आत्मकथा अंक'।

आकार क्राउन अठपेजी

पृष्ठ 208

अजिल्द : 978-81-7124-631-1 • रु० 200.00

(पुस्तक के एक अध्याय का अंश)

मेरी गिरफ्तारी

पूस का महीना था और 10 बजे दिन का समय। मैं स्नान करके अपने घर में बैठी हुई थी कि महिला-सभा की एक देवीजी आकर बोलीं—चलिये, आपको महिला सभा में बुलाया है।

मैंने पूछा—क्यों, क्या काम है?

देवीजी ने कहा—मुझे खुद ही नहीं मालूम। मुझ से इतना ही कहा कि आपको बुला लाओ।

मेरे पतिदेव चार दिन पहले ही बाहर गये हुए थे। मेरी लड़की, दो लड़के और नौकर घर में थे। लड़की ने कहा—अम्मा भोजन कर लो। मैंने कहा—अभी आती हूँ, तब भोजन करूँगी।

मैं महिला आश्रम पहुँची, तो मालूम हुआ चौक में पाँच स्वयं-सेवक पिकेट करते हुए गिरफ्तार हो गये हैं और अब हमें पिकेट करने जाना है। मर्दों की गिरफ्तारी से दूकानदारों पर कोई असर नहीं पड़ता। गाँठों पर मुहर नहीं लगवाते और न विलायती कपड़े बेचना छोड़ते हैं।

मैंने 6 बहनों को साथ लिया और चौक में जा पहुँची। पिकेटिंग शुरू हो गई—विलायती कपड़े बेचना हराम है।

ज़री देर में बहुत-से आदमी जमा हो गए और दूकानदारों में भी कुछ हलचल मची। यकायक पुलीस के कई कांस्टेबल आ पहुँचे और आदमियों को वहाँ से हटा दिया। तब दारोग़ाजी ने आकर मुझ से कहा—देवीजी, हम आपको गिरफ्तार करते हैं।

मैंने वारंट माँगा। इसका जवाब यह मिला कि नये कायदे के अनुसार वारंट की कोई जरूरत नहीं है।

मैंने बहनों से कहा—बोलो महात्मा गाँधी की जय! भारत माता की जय!

उसी वक्त लारी आ गई। हम सब उसमें जा बैठीं। लारी तेज़ी से चली और हम ऊँचे स्वरों से राष्ट्रीय गीत गाने लगे।

जब लारी बस्ती के बाहर निकल गई, तो मुझे चिन्ता हुई, यह लोग कहीं किसी बीहड़ स्थान में न लिये जाते हों। इसके पहले एक बार कई बहनों को रात के समय शहर से पाँच मील पर छोड़ दिया गया था।

लारी में पुलिस के पंद्रह आदमी बैठे हुए थे। दारोग़ाजी नहीं थे। दो-चार आदमियों की आँखों में मुझे आँसू दिखाई दिये। मैंने उनसे कहा—भैया, हमें जेल में ही छोड़ना। ऐसा न हो इधर-उधर छोड़कर चल दो।

एक सिपाही बोला—नहीं माताजी, आपको जेल में ही पहुँचायेंगे। क्या करें, पेट सब करवाता है, नहीं क्या हमारे हृदय नहीं है। जिन माताओं और बहनों की पूजा करनी चाहिए, क्या उन्हें गिरफ्तार करते हमें रंज नहीं होता। हमें यहाँ 22) मिलते हैं। कोई दस रुपये महीना भी देने को कहे, तो हम आज यह पाप की नौकरी छोड़ने को तैयार हैं।

उन लोगों की बेबसी देखकर मुझे दया आ गई। बोली—भाइयों, दुखी मत होओ। तुम सरकार के नौकर हो, तुम्हारा यही धर्म है कि अपने मालिक की सेवा सच्चे मन से करो। हम लोग भी तो अपने नेता की ही आज्ञा पालन कर रहे हैं।

एक सिपाही ने कहा—आपको धन्य है! आप लोग इतनी उदार न होतीं, तो जेल क्यों जातीं।

लारी जेल के द्वार पर पहुँच गई। दारोग़ाजी वहाँ पहले ही पहुँच गये थे। उन्हें आते देख सब सिपाही चुप हो गये। इन ग़रीबों को अपनी आत्मा को कितना दबाना पड़ता है।

हम लोग जेल के दफ्तर में गये। वहाँ जेलर साहब ने हमारे नाम और पते लिखे। जिन बहनों के पास जेवर थे, उन्होंने वही जमाकर दिये। हमने जेलर साहब से यह फोन कर देने को कहा कि हम लोग जेल में पहुँच गये। तब जेल की जमादारिन आई और हमें जनाने वार्ड की ओर ले चली।

जेल में पहले ही से कई बहनें कारावास कर रही थीं। उन्हें हम लोगों के आने की सूचना मिल गई थी। अंचल में फूल लिये खड़ी थीं। हम लोग ज्यों ही पहुँचे, उन्होंने हमारे ऊपर फूलों की वर्षा की और गले मिलीं। इतने प्रेम से हमारा स्वागत किया, मानो बिछुड़ी हुई बहनें बहुत दिनों बाद मिली हों। फिर पूछने लगीं—आप लोग कैसे आईं? हमने अपनी कथा कह सुनाई। शाम तक सभी बाहर का समाचार पूछती रहीं। जेल का हाल भी उनसे बहुत कुछ मालूम हुआ।

तीन बजे जेल का एक बाबू आकर पूछने लगा—आप लोग मांस, और अंडे खाती हैं। हम लोगों ने कह दिया—'नहीं।' तब वह आटा, दाल चावल, घी, सूजी, नमक मसाला, लकड़ी आदि रखवा गया। दूसरी बार कम्बल और टाट के फट्टे दे गया। मेरे साथ की बहनों ने तो भोजन पकाया, पर मुझे इच्छा न थी। ससुराल में आनेवाली नई बहू की भाँति मेरा मन चिन्तित था।

सन्ध्या समय मेरे बच्चे मुझसे मिलने पहुँचे। मैं फिर दफ्तर में लाई गई। मैंने बच्चों को समझाया। तुम मेरी ज़रा भी चिन्ता न करो। मैं यहाँ बहुत आराम से हूँ। आपस में लड़ाई न करना। प्रेम से रहना। एक बहन बच्चों के साथ मुझसे मिलने गई हुई थी। मैंने अपने बच्चे उन्हें सौंपे और कहा—जब तक स्वामीजी न आ जायँ, आप इनकी निगरानी कीजिएगा। अपने बच्चों को यों दूसरे की दया पर छोड़ते दुःख हो रहा था। मैं बच्चों से बातें तो करती थी; पर उनकी ओर देखती न थी। आँखों में बार-बार आँसू भर आते थे। सन्तोष इतना था, कि बच्चों को अपना कर्त्तव्य ज्ञात था। सब प्रसन्न थे। जब मैं महिला-आश्रम जाया करती थी, तो छोटा लड़का जो दस साल का था, स्कूल जाते समय हर दिन कहकर जाता था—अम्मा, तुम कहीं न जाना। तुम नहीं रहती, तो घर अच्छा नहीं लगता। ऐसा न हो तुम भी गिरफ्तार हो जाओ। तब मैं उसको समझाती थी—मान लो गिरफ्तार ही हो जाऊँ, तो क्या तुम रोओगे और मुझसे मुआफ़ी मँगवाओगे। तब वह कहता—नहीं अम्माँ, हम नहीं रोएँगे, तुम मुआफ़ी न माँगना। आज उसे जेल में देख कातर हो उठी। उलटी बात हुई। बालक तो प्रसन्न था और मैं जो उसे समझाया करती थी, मुँह फेर-फेरकर आँसू पोंछती थी।

थोड़ी देर में लड़के विदा हो गये और मैं जेल में लाई गई।

पहले मैं सोचती थी, जेल में लोगों को बड़ी तकलीफ होती होगी। यह मेरा भ्रम था। मैं तकलीफ़ों के लिये तैयार होकर आई थी; मगर यहाँ किसी तरह का कष्ट न हुआ। कहना चाहिए, इस जेल के देखते हमारे घर ही जेल हैं।...

प्राप्ति स्थान

विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी

www.vvpbooks.com

सम्मान-पुरस्कार

भारतीय अमेरिकी डॉ० सिद्धार्थ को कैंसर पर जीवनी के लिए मिला पुलित्जर

क्या ऐसा कोई डॉक्टर देखा है, जो कैंसर का इलाज कराते कराते कंगाल हो चुके अपने मरीजों और उनके परिवार के सदस्यों को अपने घर में शरण दे, उनको अपने बिस्तर पर सुलाए और खुद अपने परिवार के साथ जमीन पर सोए। उनके खान-पान से लेकर उनके इलाज तक का खर्च भी उठाए। जी हाँ, मुनाफाखोरी के इस दौर में डॉ० सिद्धार्थ मुखर्जी जैसे लोग भी हैं, जो ऐसा करते हैं। सिद्धार्थ की यह इंसानियत अब प्रतिष्ठित पुरस्कार पुलित्जर के जरिए दुनिया के सामने नजीर बन गई है। कैंसर मरीजों का इलाज करने के दौरान संवेदनाओं के सागर में डूबते-उतरते सिद्धार्थ ने 'द एम्परर ऑफ ऑल मालाडीज : ए बायोग्राफी ऑफ कैंसर' पुस्तक के रूप में जिन्दगी से उनकी जद्दोजहद को शब्द दिए हैं।

यह पुरस्कार नॉन फिक्शन श्रेणी में दिया गया। जबकि कथा श्रेणी में यह पुरस्कार अमेरिका की जेनिफर एगन को उनके उपन्यास 'अ विजिट फ्रॉम द गून स्क्वाड' के लिए दिया गया। पुलित्जर पुरस्कार अमेरिका में साहित्य, पत्रकारिता और संगीत में रचनात्मक योगदान के लिए दिया जाता है।

'लास एंजिलिस टाइम्स' को मिला पुलित्जर

समाचार पत्र 'लास एंजिलिस टाइम्स' को पत्रकारिता क्षेत्र के सबसे बड़े सम्मान पुलित्जर पुरस्कार से सम्मानित किया गया। समाचार पत्र ने बेल शहर में एक वेतन घोटाले का खुलासा किया था, जिसके बाद आठ लोगों पर अभियोग लगाया गया। वही पुलित्जर पुरस्कार के 95 साल के इतिहास में यह पहला मौका है जब ब्रेकिंग-न्यूज की कैटेगरी में कोई पुरस्कार नहीं दिया गया।

लास एंजिलिस टाइम्स को बेल, कैलिफ में राजनीतिज्ञों द्वारा छह अंकों में वेतन लेने की खबर की सीरीज के लिए यह पुरस्कार दिया गया। इसी अखबार के फोटोग्राफर बारबरा डेविडसन को फीचर फोटोग्राफी के लिए पुलित्जर पुरस्कार दिया गया है। उन्होंने हिंसक गिरोह के शिकार बने लोगों की तस्वीरें जारी की थीं। न्यूयार्क टाइम्स को अन्तर्राष्ट्रीय रिपोर्टिंग और कमेंट्री के लिए दो पुरस्कार मिले।

भैरप्पा के उपन्यास को सरस्वती सम्मान

बीते 25 वर्ष से कन्नड़ भाषा के 'बेस्टसेलर' उपन्यासकार प्रो० एस०एल० भैरप्पा के उपन्यास 'मंद्र' को 2010 के 20वें सरस्वती सम्मान के लिए चुना गया है। के०के० बिड़ला फाउंडेशन द्वारा दिए जाने वाले इस पुरस्कार के लिए 2002 में प्रकाशित इस साहित्यिक कृति का चयन 2000 से 2009 में बाइस भारतीय भाषाओं में प्रकाशित पुस्तकाकार रचनाओं में से किया गया। सरस्वती सम्मान की शुरुआत 1991 में की गई थी। इसके तहत साढ़े सात लाख रुपए नकद, प्रशस्ति पत्र और पट्टिका प्रदान की जाती है।

नीरज की पहल पर कवियों के लिए पाँच लाख का पुरस्कार

राष्ट्रीय स्तर के कवियों के सम्मान के लिए हरियाणा सरकार ने लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड देने का फैसला किया है। इसमें पाँच लाख रुपये की राशि दी जाएगी। यह फैसला हरियाणा के मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा ने गीतकार तथा कवि गोपाल दास नीरज की सलाह पर किया। हरियाणा निवास में आयोजित काव्य संध्या पर इसकी घोषणा राज्यपाल जगन्नाथ पहाड़िया ने की।

काव्य संध्या का आयोजन हरियाणा साहित्य अकादमी की ओर से किया गया था। सुपरिचित गीतकार-कवि श्री नीरज ने काव्य संध्या में अपनी रचनाओं से लोगों को भाव विभोर कर दिया।

अशोक वाजपेयी ने भारत भारती सम्मान ठुकराया

उत्तर प्रदेश सरकार का प्रतिष्ठित भारत भारती सम्मान ललित कला अकादमी के चेयरमैन और प्रसिद्ध कवि अशोक वाजपेयी ने लेने से इन्कार कर दिया है। इस सम्मान के अन्तर्गत ढाई लाख रुपये दिये जाते हैं।

इसमें पहले के 20 व 22 लोगों की अपेक्षा बहुत कम 3 या 4 लोगों को पुरस्कार दिया जा रहा है। इसका अशोक वाजपेयी विरोध कर रहे हैं। इसे लेकर वाजपेयी ने उत्तर प्रदेश सरकार को दो पत्र भी लिखे थे जिसका कोई जवाब नहीं आया। उन्होंने फिर से कठोर शब्दों में पत्र लिखकर कहा है, ''जिस लेखक को आप अपना सर्वोच्च सम्मान देने जा रहे हैं, उसके पत्रों का जवाब देना भी उचित नहीं समझते। ऐसे में मैं सम्मान लेना अपनी और लेखक समाज की तौहीन समझता हूँ।''

बालाचंदर को दादा साहेब फाल्के अवार्ड

अपनी अनूठी लेखन शैली और ताजगी भरे निर्देशन के जरिए भारतीय सिनेमा को नया आयाम देने वाले के० बालाचंदर को वर्ष 2010 के दादा साहेब फाल्के पुरस्कार के लिए चुना गया है। 81 वर्षीय बालाचंदर ने 1970 में उस समय तमिल सिनेमा में एक नयी सोच को जन्म दिया जब तमिल सिनेमा मेलोड्रामा की जकड़ से बाहर निकलने के लिए संघर्ष कर रहा था। बालचंदर का जीवन अकाउण्टेंट जनरल ऑफिस में एक सरकारी कर्मचारी से फिल्म जगत को अपने कौशल से चकाचौंध करने वाला दमकता सूरज बनने की परीकथा है। बहुत कम लोग जानते होंगे कि दक्षिण फिल्मों के महानायक रजनीकांत और कमल हासन को फिल्मी दुनिया में लाने वाले बालचंदर ही थे। उन्होंने जयाप्रदा, सरिता और सुजाता जैसी अभिनेत्रियों को भी खोज की। सर्वश्रेष्ठ तमिल फिल्म के लिए उन्हें चार बार राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। बालाचंदर को 1987 में पद्मश्री पुरस्कार दिया गया।

डॉ० पशुपतिनाथ की कृति पुरस्कृत

अखिल भारतीय अम्बिकाप्रसाद दिव्य स्मृति प्रतिष्ठा पुरस्कार से वरिष्ठ समीक्षक डॉ० पशुपतिनाथ उपाध्याय की कृति 'हिन्दी नाटक एवं रंगमंच' को समीक्षा विधा में पुरस्कृत करने का निर्णय पुरस्कार समिति ने लिया है। यह पुरस्कार आगामी समारोह में प्रदान किया जाएगा। डॉ० उपाध्याय की कृतियाँ

प्रविष्टियाँ आमंत्रित

प्रज्ञा प्रकाशन, रायबरेली के सौजन्य से 'प्रथम प्रज्ञा कहानी पुरस्कार-2011' हेतु प्रथम पुरस्कार रु० 5,000, द्वितीय पुरस्कार रु० 3,000, तृतीय पुरस्कार रु० 2,000, पाँच सांत्वना पुरस्कार रु० 1,000 प्रत्येक के लिए अपनी मौलिक, अप्रकाशित एवं अप्रसारित कहानी की दो प्रतियाँ सुन्दर हस्तलिपि में या टंकित 30 सितम्बर, 2011 तक प्रज्ञा प्रकाशन (प्राची मासिक) 24, जगदीशपुरम्, लखनऊ मार्ग, निकट त्रिपुला चौराहा, रायबरेली-229316 को भेज सकते हैं।

प्रविष्टियाँ आमन्त्रित

स्व० अम्बिकाप्रसाद दिव्य पुरस्कारों हेतु सभी विधाओं की पुस्तकें एवं साहित्यिक पत्रिकाएँ आमन्त्रित हैं। पुस्तकों की दो प्रतियाँ, प्रत्येक प्रविष्टि के साथ सौ रुपए प्रवेश शुल्क, लेखक-सम्पादक के दो रंगीन चित्र एवं परिचय 30 नवम्बर 2011 तक श्रीमती राजो जगदीश किंजल्क, साहित्य सदन, प्लॉट नं० 145-ए, साँईनाथ नगर, 'सी' सेक्टर, कोलार, भोपाल-462042 के पते पर भेज सकते हैं।

प्रविष्टियाँ आमन्त्रित

दिल्ली की जानी-मानी संस्था 'परम्परा' द्वारा वर्ष 2011 के 'ऋतुराज सम्मान' के लिए काव्य-ग्रन्थों की प्रविष्टियाँ आमन्त्रित हैं, जिनका प्रकाशन काल 2006-2010 के बीच होना चाहिए। लगभग 80 कविताओं की पाण्डुलिपियों पर ही विचार किया जाएगा। इस सम्मान में चयनित कवियों को 51 हजार रुपए की राशि व अंगवस्त्र भेंट किए जाते हैं। प्रकाशित ग्रन्थ अथवा पाण्डुलिपियों की दो प्रतियाँ भेजने की अन्तिम तिथि 5 जुलाई है। पता है : श्री काशीनाथ मेमानी, प्रमुख संरक्षक, 'परम्परा', डब्ल्यू-दो, ग्रेटर कैलाश भाग-दो, नई दिल्ली-110048। पूर्व में भेजी गई इस अवधि की सामग्री को दुबारा न भेजें। वह स्वत: विचारणीय रहेगी।

'मिथकीय समीक्षा' तथा 'शिक्षा और संस्कृति' पूर्व में उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा साहित्य-सर्जना पुरस्कार से पुरस्कृत हो चुकी हैं।

डॉ० भारतीय को स्वामी ओमानन्द विद्वत् सम्मान

गुरुकुल झज्जर ने गत 22 मार्च को अपने वार्षिक समारोह में प्रसिद्ध लेखक एवं वैदिक विद्वान् डॉ० भवानीलाल भारतीय को स्वामी ओमानन्द विद्वत् सम्मान से सम्मानित किया। इसके अन्तर्गत उन्हें अंग वस्त्र, अभिनन्दन पत्र एवं पन्द्रह हजार की नकद राशि प्रदान की गई।

17वाँ अन्तर्राष्ट्रीय इंदु शर्मा कथा सम्मान

कथा (यू०के०) के महा-सचिव एवं प्रतिष्ठि कथाकार श्री तेजेन्द्र शर्मा ने लंदन से सूचित किया है कि वर्ष 2011 के लिए अन्तर्राष्ट्रीय इंदु शर्मा कथा सम्मान पत्रकार कथाकार श्री विकास कुमार झा को उनके उपन्यास 'मैकलुस्कीगंज' पर देने का निर्णय लिया गया है। यह उपन्यास दुनियाँ के एक अकेले ऐग्लो-इंडियन ग्राम की महागाथा है। यह लन्दन के हाउस ऑफ कॉमन्स में 27 जून, 2011 की शाम को एक भव्य आयोजन में प्रदान किया जायेगा। वर्ष 2011 के लिए पद्मानन्द साहित्य सम्मान इस बार लेस्टर निवासी कथाकार एवं ग़ज़लकार नीना पॉल को उनके उपन्यास 'तलाश' के लिए दिया जायेगा।

कथा यू०के० को फ्रेड्रिक पिन्कोट सम्मान

20 मार्च 2011 ब्रिटेन में भारतीय उच्चायुक्त महामहिम श्री नलिन सूरी ने कथा यू०के० को हिन्दी साहित्य एवं भाषा के प्रचार प्रसार के लिये वर्ष 2010 का फ्रेड्रिक पिन्कोट सम्मान प्रदान करते हुए उनके कार्यक्रमों की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

सम्मान ग्रहण करते हुए तेजेन्द्र शर्मा (महासचिव—कथा यू०के०) ने उच्चायोग को धन्यवाद दिया।

इस कार्यक्रम में उषा राजे सक्सेना को हरिवंशराय बच्चन सम्मान, स्वर्गीय महावीर शर्मा को हजारीप्रसाद द्विवेदी सम्मान (पत्रकारिता-मरणोपरान्त), एवं एश्वर्य कुमार को जॉन गिलक्रिस्ट सम्मान (अध्यापक) भी प्रदान किये गये।

से०रा० यात्री को महात्मा गाँधी सम्मान

वरिष्ठ कथाकार से०रा० यात्री को प्रदेश के दूसरे बड़े साहित्य पुरस्कार 'महात्मा गाँधी सम्मान' से 19 मई को उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान ने विभूषित किया। इसी के समकक्ष हिन्दी गौरव सम्मान स्व० डॉ० भवदेव पाण्डेय को दिया गया। उनके असामयिक निधन के कारण उनके पुत्र यथार्थ पाण्डेय ने इसे ग्रहण किया। हिन्दी संस्थान में आयोजित समारोह कवि सुमित्रानन्दन पंत को समर्पित था।

'हेडगेवार प्रज्ञा सम्मान'

कोलकाता महानगर की सुप्रसिद्ध साहित्यिक-सामाजिक संस्था श्रीबड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय द्वारा प्रवर्तित 22वाँ 'डॉ० हेडगेवार प्रज्ञा सम्मान' प्रख्यात साहित्यकार डॉ० कृष्ण बिहारी मिश्र को पूर्व केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री डॉ० मुरली मनोहर जोशी द्वारा प्रदान किया गया। सम्मान-स्वरूप 51 हजार रुपये की राशि एवं मान-पत्र भेंट किये गये।

'सृजन-श्री' सम्मान

'आधारशिला' पत्रिका के सम्पादक, लेखक और वरिष्ठ पत्रकार दिवाकर भट्ट को हिन्दी साहित्य में उनके योगदान के लिए बैंकाक में 'सृजन-श्री' सम्मान से सम्मानित किया गया।

बैंकाक के शिल्पाकॉन विश्वविद्यालय में हुए कार्यक्रम में श्री भट्ट को फैकल्टी ऑफ आर्कियोलॉजी के डायरेक्टर प्रो० सोमवट ने सम्मानित किया, जबकि महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के कुलपति व वरिष्ठ लेखक विभूति नारायण राय की अध्यक्षता में हुए हिन्दी सम्मेलन में लेखक दिवाकर भट्ट को 'सृजन-श्री' सम्मान दिया गया।

मीरा पुरस्कार ज्योतिपुंज को

राजस्थान साहित्य अकादेमी का मीरा पुरस्कार कवि डॉ० ज्योतिपुंज को उनकी काव्यकृति 'बोलो मनु : बोलते क्यों नहीं' पर दिया जाएगा।

अकादेमी के सचिव डॉ० प्रमोद भट्ट के अनुसार मीरा पुरस्कार में डॉ० ज्योतिपुंज को 31 हजार रुपए दिए जाएँगे। अकादेमी का कविता विधा का सुधीन्द्र पुरस्कार गोविन्द माथुर को उनकी काव्य-कृति 'बची हुई हँसी' पर दिया जाएगा। कथा-उपन्यास विधा का डॉ० रांगेय राघव पुरस्कार मनीषा कुलश्रेष्ठ को उनकी कृति 'कठपुतलियाँ' पर, नाटक के लिए देवीलाल सामर पुरस्कार हरीश बी शर्मा को उनकी कृति 'गोपीचंद की नाव और देवता' पर, आलोचना के लिए देवराज उपाध्याय पुरस्कार जोधपुर के मोहनकृष्ण बोहरा को उनकी कृति 'एलियट और हिन्दी साहित्य चिन्तन' पर, विविध विधाओं का कन्हैयालाल सहल पुरस्कार बेगूं के नंद किशोर चतुर्वेदी को उनके यात्रा संस्मरण की कृति 'दिव्य देवालयों का देश दक्षिण भारत' पर दिया जाएगा। ये सभी पुरस्कार 15 हजार रुपए के हैं।

कुँवर नारायण को सम्मान

हिन्दी के प्रसिद्ध कवि कुँवर नारायण को उनके निवास पर वर्ष 2011 के पुणे पण्डित पुरस्कार से सम्मानित किया गया। पुणे की संस्था 'द आर्ट एण्ड म्यूजिक फाउण्डेशन' द्वारा कुँवर नारायण को महाराष्ट्र के वरिष्ठ साहित्यकार एवं पत्रकार अरुण साधु के हाथों यह पुरस्कार दिया गया। पुरस्कारस्वरूप एक स्मृति चिह्न, शॉल और मानपत्र दिया गया।

अन्ना को एक करोड़ रुपये का पुरस्कार

लोकपाल विधेयक के लिए अनशन कर देश को झकझोर देने वाले अन्ना हजारे को भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई के लिए एक करोड़ का आई०आई०पी०एम० रवीन्द्रनाथ टैगोर अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति पुरस्कार दिया जाएगा। इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ प्लानिंग एण्ड मैनेजमेंट (आई०आई०पी०एम०) द्वारा दिया जाने वाला यह पुरस्कार पिछले वर्ष मणिपुर की इरोम शर्मिला चानू को दिया गया था।

प्रो० रघुवंश को 22वाँ मूर्तिदेवी पुरस्कार

विगत 16 मई को नई दिल्ली के विज्ञान भवन में उपराष्ट्रपति माननीय हामिद अंसारी ने प्रखर चिंतक-लेखक डॉ० रघुवंश को उनकी कृति 'पश्चिमी भौतिक संस्कृति का उत्थान और पतन' के लिए भारतीय ज्ञानपीठ प्रवर्तित वर्ष 2008 का 'मूर्तिदेवी पुरस्कार' प्रदान किया। इस अवसर पर भारतीय ज्ञानपीठ की अध्यक्ष श्रीमती इंदु जैन तथा निर्णायक मण्डल के अध्यक्ष श्री त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी के अतिरिक्त हिन्दी के प्रबुद्ध साहित्यकार, लेखक एवं हिन्दी-प्रेमी उपस्थित थे।

राजेन्द्र उपाध्याय को 'मातृश्री पुरस्कार'

विगत दिनों नई दिल्ली में विख्यात साहित्यकार और आकाशवाणी के उपनिदेशक श्री राजेन्द्र उपाध्याय को इलेक्ट्रॉनिक पत्रकारिता के क्षेत्र में उपलब्धि के लिए पूर्व उपप्रधानमन्त्री श्री लालकृष्ण आडवाणी ने 'मातृश्री पुरस्कार' प्रदान किया। दूरदर्शन के श्री गिरिश निशाना, आज तक के श्री अनुराग ढांडा, आईबीएन-7 की सुश्री मौसमी सिंह और सहारा समय के श्री संजय वर्मा, पी०टी०आई० के श्री अजय कौल और श्री सुधीर उपाध्याय, यू०एन०आई० के श्री राजीव सलूजा तथा यूनीवार्ता की सुश्री आशा मिश्रा उपाध्याय सहित लगभग 25 पत्रकारों को यह पुरस्कार दिया गया।

प्रो० रमेश दवे को 'राष्ट्रीय शिक्षा पुरस्कार'

22 अप्रैल को भोपाल में वरिष्ठ शिक्षाविद् और साहित्यकार प्रो० रमेश दवे की कृति 'हम और हमारी शिक्षा' को भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने शिक्षा योजना के अन्तर्गत एक लाख रुपए का राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान करने का निर्णय लिया है।

डॉ० रमाकान्त शुक्ला को सम्मान

6 मई को दिल्ली में प्रसिद्ध संस्कृत साहित्यकार डॉ० रमाकान्त शुक्ला को राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटिल ने पुरस्कार देकर सम्मानित किया। उन्हें यह सम्मान संस्कृत भाषा में उत्कृष्ट योगदान देने के लिए दिया गया। सम्मान-स्वरूप उन्हें प्रमाण-पत्र, शॉल व पाँच लाख रुपए की राशि प्रदान की। डॉ० शुक्ला संस्कृत में 19 पुस्तकें लिख चुके हैं।

कलागुरु केदारशर्मा के व्यंग्य-चित्रों में काशी

डॉ० धीरेन्द्रनाथ सिंह

'' महादेव शंकर के त्रिशूल पर बसी, तीनों लोकों से न्यारी काशी का निराला चितेरा, कलम और कूँची का समान रूप से धनी, मन का राजा और फक्कड़—नाम था केदार शर्मा। काशी, जहाँ जिसने धूनी रमाई वह संत ओर योगी बन गया। बाबा विश्वनाथ की जिस पर कृपा हो गयी वह साहित्यकार और कलाकार बन गया। 'चना चबेना, गंगजल जो पूरबे करतार, काशी कभी न छोड़िये, विश्वनाथ दरबार' जहाँ का दर्शन है, गंगा की तरंग में जो डुबकियाँ लगाता रहा वह कहीं बाहर नहीं गया, वह बनारसी बन गया।''

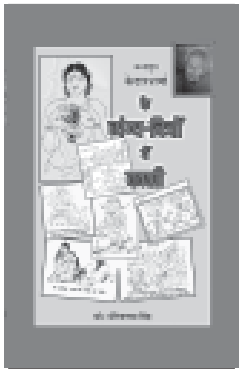

आकार
रायल
अठपेजी

पृष्ठ
312

सजिल्द : 81-7124-395-9 • रु० 300.00
अजिल्द : 81-7124-463-7 • रु० 200.00

(पुस्तक का एक अंश)

मेरी सरकार

मैं अपनी पत्नी को आवश्यकतानुसार कभी श्रीमती, कभी सरकार, कभी बीबी और कभी मेम साहब कहा करता हूँ। जब कभी उनके दिमाग का पारा अधिक ऊपर चढ़कर 'फ्लू' का-सा सन्देह पैदा कर देता है, तब बर्फ के स्थान पर मैं 'श्रीमतीजी' का प्रयोग कर उनके दिमाग की गर्मी शान्त रखता हूँ। जब बीबी साहिबा किसी बात की जिद अथवा हठ पर आमादा हो जाती हैं, तब मिस्टर जिना साहब की रूह सामने आ जाती है। जब अपनी गलतियों को मुझ पर लादने की चेष्टा करती हैं, तब पाकिस्तानी नेताओं के नाच का नजारा स्पष्ट झलकने लगता है। उनकी उल्टी-सीधी हुकूमत का दौर जब चलने लगता है, उसके सामने सरकारी हुकूमत बिल्ली की तरह सिकुड़ जाती है। ऐसे समय मुझे ठीक उसी कटकीने से काम निकालना पड़ता है, जैसे जनता निकाल लेती है। मसलन वाराणसी से जगन्नाथजी के मेले पर सरकारी आदेश—'कोई खाद्य सामग्री न बेची जाय।' दूकानदारों ने चार कदम हटकर अपनी-अपनी दूकानें सजायीं। मेले वालों ने ठाठ से चार दिनों की बासी चाट और नानखटाइयाँ खरीदीं, खायीं और अपने-अपने घर लेते गये। सरकार चूँ भी न कर सकी। क्योंकि दूकानें मेला परिसर के बाहर थीं।

ठीक इसी प्रकार जब मैं शाम को घूमने निकलता हूँ, तब मेरी घरवाली सरकार की आज्ञा होती है देखिये! आप आठ से ज्यादा देर न हों। मैं सिर खुजलाता घर से निकल पड़ता हूँ और तरकीब सोचता जाता हूँ। ठीक पौने-ग्यारह बजे जब लौटकर घर पहुँचता हूँ तो चार चमकती हुई चूड़ियाँ ठीक उसी लहजे से मेम साहब को नजर करता हूँ, जैसे सरकारी अधिकारियों को डरते-डरते कोई घूस अथवा नजर पेश करता है। घड़ी की ओर उनकी निगाह घूमते ही मैं चौकन्ना हो जाता हूँ और उनकी जवाब-तल्वी के पहले ही अपनी सफाई गिड़गिड़ाने लगता हूँ। 'कई दुकानों में हजारों चूड़ियाँ देखने के बाद कहीं ये तुम्हारी पसन्द लायक चूड़ियाँ चुन सका हूँ।' मेरी सरकार मेरे तोहफे को मद्देनजर रखते हुए मेरी चालाकी पर मुस्कुराकर रह जाती हैं। मैं उधर कोने में जाकर अपनी मूछों पर ताव दे देता हूँ।

राज्य के स्वास्थ्यमन्त्री वाराणसी पधारे थे। उन्होंने सर्किट हाउस और एक-दो बने-ठने अस्पतालों के निरीक्षण-मात्र से ही बनारस की नाड़ी टटोल ली। सब बातें वैसे ही मिनटों में जान गये जैसे श्रीमतीजी अपने रसोईघर से पूरे मकान और पास-पड़ोस की सब खबरों और हालातों से वाकिफ हो जाती हैं। मन्त्री महोदय ने योग्य एवं सम्मानित डॉक्टरों के निर्णय को अपने मन्त्रित्व ज्ञान से झूठ साबित कर ठीक वैसा ही बेवकूफ बना दिया, जैसे मेरी बीबी हर बात में मुझे बनाया करती है। मेरी श्रीमतीजी अपनी नादान मजदूरिन का झूठा गुणगान करते-करते उसी तरह नहीं थकतीं, जैसे स्वास्थ्य मन्त्री अपने स्वास्थ्याधिकारियों के तरीकों के पुल बाँधते नहीं थकते। अस्पतालों में जरूरत के मुताबिक उचित मात्रा में ठिकाने की दवाइयाँ हैं या नहीं। डॉक्टरों, कम्पाउण्डरों और मेहतरों की कमी उन्हें नहीं दिखाई दी। कभी दिखाई दी तो अस्पतालों के 'व्यापक विस्तार' की। ठीक यही आदत मेरी गृहिणी सरकार की है। घरेलू अन्य आवश्यकताओं की ओर उनका ध्यान कम जाता है। उन्हें हमेशा साड़ी, ब्लाउज और आभूषणों के विस्तार की ही चिन्ता सताये रहती है।

मेरी मेम साहिबा गाउन अथवा ऊँची एड़ी पहनतीं। वे वैसी ही मेम हैं, जैसा ढीला पैजामे, धोती कुरते पर टोप लगाकर मैं साहब बन गया हूँ। मेम साहब का सम्बोधन मैं विशेष रूप से उस समयअपने मतलब से अधिक करता हूँ, जब कोई मनहूस काला-कलूटा गँवार खोमचे वाला, तरकारी वाला अथवा आम वाला अपना बाकी दाम माँगने टपक पड़ता है। तुरन्त अपनी बला मेमसाहब के मत्थे टालकर मैं सिगरेट का कश लेने, अखबार पढ़ने में या कोई पुस्तक उलटने में मशगूल हो जाता हूँ। वे अपनी नाक पर एक उँगली रखकर न जाने कौन-सा जादू फूँकती हैं कि वह कम्बख़्त फौरन रफूचक्कर बन जाता है। हाजतरफा होने पर जैसा आनन्द मिलता है, ठीक उसी-आसूदगी से मैं इत्मीनान की साँस तब लेता हूँ।

श्रीमतीजी उच्च शिक्षा की ओढ़नी चादर के पर्दे से हमेशा अपने को बचाती रहीं। नतीजा वही निकला जो निकलना था। हैजे के विषाणु की तरह आजादी की नयी हवा उन्हें भी लग ही गयी। मर्दों के साथ कन्धे से कन्धे मिलाकर चलना, समानता का व्यवहार पाना उन्हें उचित जँचता है। पुरुषों पर वे स्त्रियों द्वारा पूर्ण नियन्त्रण की पक्षपातिनी हैं। मुझ पर उनका कन्ट्रोल उतना ही सफल पाता है, जितना सरकार का गल्ला विक्रेताओं पर। लाखों मन गेहूँ, चीनी की व्यवस्था करने पर भी जैसे भाव नहीं गिरता, जनता की परेशानी नहीं जाती, ठीक उसी तरह अपनी बीबी को लाख समझाने पर भी उनसे सुनियोजित विचारों या इरादों को टस से मस करना टेढ़ी खीर बन जाती है।

आजकल घरों में चौका-बासन करने वाली मजदूरिनों का दिमाग ठीक वैसा ही चढ़ा रहता है, जैसा 'कमसरियट' के बाबुओं का, रेलवे दफ़्तरों के क्लर्कों या मिलों में काम करने वाले साधारण मजदूरों का। साम्यवादी युग का प्रभाव इन पर पूर्ण रूप से चढ़ा हुआ है, जैसे लोहे पर मोर्चा चढ़ जाता है। 'काम कम लो, पैसे अधिक दो' का नारा बुलन्द है। अधिकारियों की बात न मानना, समय का ध्यान न रखना, बेगारी-सा काम करना इनका स्वभाव बन गया है। जान पड़ता है मजदूरनियाँ भी किसी तरह यूनियन की सदस्या हों।

हाँ, तो आजकल श्रीमतीजी की लाडली मजदूरिन की छाया मेरे घर नहीं पड़ती। साफ जाहिर था कि उसमें सरासर कसूर मेरा था। उसके बार-बार नागा करने पर कहीं मैंने कह दिया कि जब आना न हुआ करे, तो उसके पहले दिन सूचित कर दे कि कल मैं न आ सकूँगी। मेरी बात समाप्त भी न हो पायी थी और उसका तेवर बदल गया। छनछनाती हुई घर से निकली और दूसरे दिन से गायब। मुसीबत आयी मेमसाहब के सर। सबेरे-शाम बासन रगड़ने बैठतीं। मजदूरिन के नाम झखतीं और आँसू बहातीं। मैं समझ रहा था कि किसी दिन यह 'टाइम बम' फूटने ही वाला है।...

प्राप्ति स्थान

विश्वविद्यालय प्रकाशन ,चौक, वाराणसी

www.vvpbooks.com

संगोष्ठी/लोकार्पण

गुजरात विद्यापीठ में शताब्दी वंदना

गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद के हिन्दी विभाग में हिन्दी के शीर्षस्थ कवि शमशेर बहादुर सिंह, सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय', केदारनाथ अग्रवाल तथा नागार्जुन की जन्म शताब्दी मनायी गयी। हिन्दी-विभागाध्यक्ष प्रो० मालती दुबे ने अतिथि वक्ता डॉ० शिवप्रसाद शुक्ल का परिचय दिया। डॉ० शुक्ल ने शमशेर की हिन्दी उर्दू मास्टरी के साथ उनकी चित्रकला एवं कविताओं के काव्य सौन्दर्य को रेखांकित करते हुए उनकी प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। केदारनाथ अग्रवाल की 'कृषक संस्कृति' कविता की चर्चा करते हुए सूर की 'गोचारण संस्कृति' और प्रेमचंद की 'कृषक संस्कृति' के बीच सादृश्य प्रस्तुत किया। साथ ही कवि नागार्जुन के वृहद साहित्य काव्य, उपन्यास पर चर्चा करते हुए उनकी धर्म निरपेक्षता पर प्रकाश डाला। दूसरे दिन प्रो० दुर्गा प्रसाद गुप्त ने सच्चिदानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' की समग्र साहित्यिक उपलब्धि की चर्चा करते हुए उनकी प्रासंगिकता को रेखांकित किया। प्रो० मालती दुबे ने 'अज्ञेय' जी के उपन्यासों में निहित मनोविज्ञान का तथ्यपरक विश्लेषण किया।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर की 150वीं जयन्ती पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

साहित्य अकादेमी ने संस्कृति मन्त्रालय, भारत सरकार के सहयोग से रवीन्द्रनाथ ठाकुर की 150वीं जयन्ती के अवसर पर साहित्य अकादेमी सभागार, नई दिल्ली में एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। 7-9 मई 2011 को आयोजित इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में उनके उपन्यासों, कहानियों, नाटकों, निबन्धों, काव्य और बाल साहित्य पर छह सत्रों में व्यापक चर्चा हुई।

उद्घाटन सत्र का बीज-भाषण प्रसिद्ध आलोचक और तुलनात्मक साहित्य के अध्येता प्रो० इंद्रनाथ चौधुरी ने देते हुए कहा कि पश्चिमी समाज आज तक रवीन्द्रनाथ ठाकुर की 'मानवीय एकता' और 'आधुनिकता' की परिभाषा को समझने की कोशिश कर रहा है। पश्चिम आज जिस मल्टी-कल्चर की बात कर रहा है, वह उसकी जरूरत को बहुत पहले ही भाँप चुके थे। उनके लिए आधुनिकता का मतलब अतीत का त्याग, बुद्धिवाद का प्रचार और संशय का उदय नहीं था। उनकी आधुनिकता यूरोप की परिभाषा से बिल्कुल भिन्न थी, इसीलिए रवीन्द्रनाथ ठाकुर भारत को एक भौगोलिक पहचान के रूप में नहीं बल्कि एक वैचारिक पहचान के रूप में प्रस्तुत करना चाहते थे।

इसके पहले साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष सुनील गंगोपाध्याय ने अपना अध्यक्षीय व्याख्यान प्रस्तुत किया। अकादेमी के उपाध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने अपने विचार व्यक्त किये।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि तजाकिस्तान गणराज्य के राजदूत महामहिम सईदबेग सैदोव थे जिन्होंने अपने देश में रवीन्द्रनाथ ठाकुर की लोकप्रियता के कई उदाहरण दिए और बताया कि जल्द ही उनके देश में विश्वविद्यालय का नाम उनके नाम पर रखा जाएगा। उन्होंने ठाकुर पर लिखी अपनी एक कविता भी सुनाई।

8 मई उपन्यास सत्र की अध्यक्षता डॉ० वागीश शुक्ल ने की।

इसके बाद का सत्र उनकी कहानियों पर केन्द्रित था। अध्यक्षता करते हुए प्रसिद्ध आलोचक गोपाल राय ने कहा कि जब वे कहानियाँ लिख रहे थे तब पूरे भारतीय साहित्य में शून्य पसरा हुआ था। पहली बार किसी भी भारतीय भाषा में संवेदना के तत्त्व उनकी कहानियों में दिखाई पड़ते हैं। इस सत्र में विभिन्न मूर्धन्य विद्वानों ने विचार व्यक्त किये।

इस दिन के अन्तिम सत्र में रवीन्द्रनाथ ठाकुर के नाटकों पर बोलते हुए उषा गांगुली ने कहा कि हिन्दी समाज में रवीन्द्रनाथ ठाकुर के नाटकों को लगभग ना के बराबर प्रस्तुत किया गया है। ऐसा उनके नाटकों के उचित अनुवाद और नाट्य प्रस्तुति के लायक उनको तैयार न करने के कारण हुआ है। इस सत्र की अध्यक्षता रा०ना०वि० के पूर्व निदेशक रामगोपाल बजाज ने की।

9 मई को पहला सत्र उनके निबन्धों पर केन्द्रित था। जिसकी अध्यक्षता प्रसिद्ध कवि, आलोचक और नाटककार नन्दकिशोर आचार्य ने की। निबन्ध सत्र में सर्वश्री शम्भुनाथ, अनंत मिश्र, सोमा बन्द्योपाध्याय ने विचार व्यक्त किये।

इसके बाद का सत्र 'रवीन्द्रनाथ के काव्य' पर केन्द्रित था, जिसकी अध्यक्षता प्रसिद्ध कवि और आलोचक प्रभात त्रिपाठी ने की। काव्य सत्र में राजकुमार सैनी, प्रणव कुमार बंद्योपाध्याय, नरेन्द्र मोहन ने विचार प्रस्तुत किये।

9 मई के अन्तिम सत्र में जो उनके 'बाल साहित्य' पर केन्द्रित था, की अध्यक्षता प्रसिद्ध बाल साहित्यकार हरिकृष्ण देवसरे ने की। इस सत्र में प्रकाश मनु, सुरेन्द्र विक्रम, देवेन्द्र कुमार देवेश ने अपना विमर्श व्यक्त किया। पूरी संगोष्ठी का संचालन अकादेमी के उपसचिव ब्रजेन्द्र त्रिपाठी ने सफलतापूर्वक किया।

रहमान की जीवनी का लोकार्पण

मुम्बई, ऑस्कर विजेता ए०आर० रहमान के जीवन से जुड़ी बातों से अब उनके प्रशंसक रू-ब-रू हो सकेंगे। उनकी जीवनी 'ए०आर० रहमान : द स्पिरिट ऑफ म्यूजिक' का 6 अप्रैल को फिल्म निर्देशक मणिरत्नम ने विमोचन किया। फिल्म इतिहासकार नसरीन कबीर इसके लेखक हैं। यह किताब 'मोजार्ट ऑफ मद्रास' के नाम से मशहूर रहमान के जीवन की कहानी पेश करती है। इसमें उनके व्यक्तिगत जीवन के साथ-साथ उनके संगीत के बारे में जानकारी दी गई है। इस पुस्तक में उनके दुर्लभ चित्र भी शामिल किए गए हैं।

'लोकार्पण समाचार'

राष्ट्रभाषा हिन्दी तथा अन्य प्रादेशिक भाषाओं के विकास और संवर्द्धन के लिए, यह आवश्यक है कि इनके अन्तर्द्वार आपस में खुले हों, और वे एक-दूसरे के सहयोग से अपना सौहार्द्र, वर्चस्व और समादर बनाए रखें।

ऐसा ही एक प्रसंग पिछले दिनों सिलचर के सीमा सुरक्षा बल, भासिमपुर के प्रागंण में देखने में आया, जब सैन्य कवि मनोहर बाथम (डी०आई०जी०, सीमा सुरक्षा बल) की कृति 'सरहद से फिर' का बांग्ला अनुवाद 'सीमान्टेर काव्य' लोकार्पित हुआ।

लोकार्पण के लिए आगरा विश्वविद्यालय के ललित कला संस्थान की पूर्व निदेशिका व वर्तमान में मंगलायतन विश्वविद्यालय की डीन प्रो० चित्रलेखा सिंह विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारी हुई थीं। सीमा सुरक्षा बल, सिलचर के महानिरीक्षक श्री संजय सिंह ने समारोह की अध्यक्षता की।

पर्यावरण चेतना पर राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी

विकास संस्कृति पर्यावरण परिषद् द्वारा 'पर्यावरण चेतना' पर आधारित द्विदिवसीय राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी का आयोजन बिलासपुर में किया गया। मुख्य अतिथि श्री आई०एन० सिंह वन संरक्षक छत्तीसगढ़ शासन थे। अध्यक्षता भाषाविद् समीक्षक डॉ० विनय कुमार पाठक ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री फणीन्द्र राव वन मंडलाधिकारी बिलासपुर तथा पर्यावरणविद् श्री ललित कुमार सिंघानिया की गरिमामय उपस्थिति में कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। पर्यावरण विद् और 'पर्यावरण ऊर्जा टाइम्स' के सम्पादक ललित कुमार सिंघानिया को पर्यावरण क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने पर पर्यावरण अलंकरण सम्मान के अन्तर्गत स्मृति चिह्न, श्रीफल-शाल पुष्पहार समर्पित किया गया। दो दिनों तक चली इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में साहित्यकारों, प्राध्यापकों, पर्यावरणविदों द्वारा 130 शोध आलेखों का वाचन किया गया एवं विषय विशेषज्ञों के वक्तव्यों से नवीनतम निष्कर्षों का ज्ञापन हुआ।

केदार : जन्मशती

महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा द्वारा 'बीसवीं सदी का अर्थ : जन्मशती का सन्दर्भ' शृंखला के तहत प्रगतिशील काव्य-धारा के प्रमुख कवि केदारनाथ अग्रवाल पर उनके गृह जनपद बांदा में वैचारिक विमर्श के लिए दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में पहुँचे साहित्यिक चिंतकों के विमर्श का लब्बोलुआब यही था कि वर्तमान सन्दर्भ में बाजारपरस्त शक्ति के आगे हम मानवीय मूल्यों से कैसे कटते जा रहे

हैं। छिपी ताकतें नियोजनबद्ध तरीके से हमें असंवेदनशील बनाती जा रही हैं। वर्तमान सन्दर्भों में केदारनाथ के साहित्य पर पुनर्विश्लेषण किए जाने की जरूरत है।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति विभूति नारायण राय ने कहा कि बांदा में आकर केदारजी जैसे जनकवि को याद करना एक तरह से अलग व अनूठा प्रयास है। विश्वविद्यालय व केदार शोध पीठ, बांदा के संयुक्त तत्वावधान में 'केदारनाथ अग्रवाल एकाग्र' पर आयोजित समारोह के दौरान देशभर के साहित्यिक चिंतक साहित्यकार से०रा० यात्री, प्रह्लाद अग्रवाल, दिनेश कुमार शुक्ल, सुनीता अग्रवाल, महेश कटारे, भारत भारद्वाज आदि विमर्श के लिए एकत्रित हुए। समारोह में युवा कवि पंकज राग को उनके कविता संग्रह 'यह भूमण्डल की रात है' के लिए केदार सम्मान 2010 से पुरस्कृत किया गया। समारोह यादगार और भी बन गया जब विश्वविद्यालय द्वारा केदारजी पर प्रकाशित संचयिता : केदारनाथ अग्रवाल तथा अप्रकाशित रचनाएँ—केदार : शेष अशेष एवं प्रिये प्रिय मन (पत्नी को लिखे पत्र), कविता की बात (कविता पर आलेख), उन्मादिनी (कहानी संग्रह), 'वचन' पत्रिका के केदारनाथ अग्रवाल विशेषांक का विमोचन किया गया।

'केदार की कविता : लोक काव्य का प्रवाह' तथा 'केदार का गद्य : अनुपस्थित का आख्यान' विषय पर आयोजित अकादमिक सत्र में विद्वानों ने अपने सारगर्भित आख्यान प्रस्तुत किये। वैचारिक-सत्रों के बाद—'यादगार बनी संध्या में' काव्य-पाठ का आयोजन किया गया।

अश्क ने छोटे व नए रचनाकारों को दिया मंच—विभूति नारायण राय

वर्धा, 17 अप्रैल, 2011, महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा द्वारा 'बीसवीं सदी का अर्थ : जन्मशती का सन्दर्भ' शृंखला के तहत 'उपेन्द्रनाथ अश्क की जन्मशती' पर विश्वविद्यालय के इलाहाबाद क्षेत्रीय विस्तार केन्द्र में 'अश्क साहित्य में अभिव्यक्त समय और समाज' विषय पर संगोष्ठी आयोजित की गई। अध्यक्षीय वक्तव्य में कुलपति विभूति नारायण राय ने कहा कि अश्क व फिराक ने छोटे व नए रचनाकारों को मंच दिया। अश्कजी का साहित्य युवा रचनाकारों के लिए हमेशा से ही प्रेरणादायी रहा है। उनके बाद से यह जगह कुछ खाली है और फिर से वही माहौल बनाने की कवायद होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि उनकी जन्मशती समारोह में हमें उनके काम को आगे बढ़ाने का संकल्प लेना होगा।

अश्कजी के बारे में उनके मित्र से०रा० यात्री ने अश्क को प्रेमचंद स्कूल का साहित्यकार बताते हुए कहा कि संघर्ष और तकलीफ के दौर में उन्होंने अपना रचानधर्म नहीं छोड़ा और उनकी रचनाएँ आज के दौर में भी जीवंत हैं। वे अभिव्यक्ति और शिल्प में अनूठे रचनाकार थे। साहित्यकार भारत भारद्वाज ने कहा कि लेखकों के लिए समकालीन रहना चुनौती है और अश्कजी इस फन के माहिर थे।

अश्कजी के जीवन सफ़र पर रोशनी डालते हुए प्रो० ए०ए० फातमी ने कहा कि अश्क पहले ऐसे लेखक थे जो उर्दू से हिन्दी लेखन में आए थे। उन्होंने अश्क के व्यक्तित्व की चर्चा करते हुए कहा कि वह एक आजाद ख्यालात के लेखक थे और उनकी यही फितरत कई संघर्षों के बाद उन्हें इलाहाबाद ले आयी और यहीं के होकर रह गए।

अश्कजी के बेटे नीलाभ ने उनकी यादों की पर्तें हटाते हुए कहा कि अब हिन्दी पाठकों के लिए फिर से प्रकाशकों और लेखकों को एक-दूसरे के साथ जुड़ना होगा। नया ज्ञानोदय के सम्पादक रवीन्द्र कालिया ने अश्कजी के साथ बिताए हुए पलों को याद करते हुए कहा कि अश्कजी लेखक की लड़ाई लड़ने वाले थे। सुप्रसिद्ध लेखिका ममता कालिया ने कहा कि अश्कजी ऐसे लेखक थे जो हर पीढ़ी के साथ जुड़े हुए लगते हैं। जन्मशती शृंखला समारोह के संयोजक प्रो० संतोष भदौरिया ने मंच का संचालन किया।

केदारनाथ जन्मशती कमासिन में

पहली अप्रैल 2011 को जनकवि केदनारथ अग्रवाल के 100वें जन्मदिन के अवसर पर केदारजी के जन्म-गाँव कमासिन में प्रगतिशील लेखक संघ इकाई कमासिन, बाँदा द्वारा कमासिन गाँववासियों के स्नेहिल-सहयोग से एकदिवसीय आयोजन किया गया जिसमें बाहर से आये रचनाकारों ने ग्राम कमासिन में घूम-घूमकर जिन स्थानों को केन्द्र में रखकर केदरनाथ अग्रवाल ने अपनी अमर रचनायें लिखी थीं, प्रेम तीरथ, रामलीला का मंच, बसन्त हवा वाले खेत, वैहर और चौपाल देखी।

कार्यक्रम की शुरुआत केदारजी की प्रसिद्ध कविता 'वह जन मारे नहीं मरेगा' से की गई इसके बाद लोक कलाकार बैरिया जी द्वारा अपनी टीम के साथ केदार जी का जननाटक 'जनता का मोर्चा' का प्रभावी मंचन प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर आयोजित संगोष्ठी में विभिन्न विद्वानों के अतिरिक्त विशिष्ट अतिथि श्री केशवप्रसाद मिश्र ने विचार व्यक्त किये।

गाजीपुर में भोजपुरी लोक रस का सांस्कृतिक महाकुम्भ

स्व० रामअधार गुप्त स्मृति संस्थान और जीवनोदय शिक्षा समिति, गाजीपुर के संयुक्त आयोजकत्व में भोजपुरी के नाम पर फूहड़पन एवं सतही गीत गवनई के विरुद्ध अपनी परम्परागत श्रेष्ठ भोजपुरी लोक विधाओं को दिखाने के लिए आयोजित कार्यक्रम निर्बाध रूप से 20 घण्टे तक चार चरणों में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के परामर्शदाता प्रो० कमलेशदत्त त्रिपाठी ने किया।

प्रथम चरण 'भोजपुरी लोक साहित्य' में डॉ० एम०डी० सिंह के भोजपुरी कविता संग्रह 'चिल्होर' का विमोचन, भोजपुरी साहित्य के विद्वानों, प्रो० रामबख्श मिश्र, प्रो० प्रकाश उदय, डॉ० संजय कुमार, डॉ० आद्या प्रसाद द्विवेदी, चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह का सम्बोधन तथा प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ० विवेकी राय एवं विन्ध्याचल राय 'अचल' का अभिनन्दन हुआ। अध्यक्षता प्रो० ब्रजकिशोर ने की।

द्वितीय चरण (भोजपुरी लोक नाच) के अन्तर्गत अन्तर्राष्ट्रीय धोबीअऊ कलाकार बाबू नन्दन जी का अभिनन्दन हुआ तथा विलुप्त हो रही भोजपुरी नाच कलाओं धोबीअऊ, गोड़ऊ, गोहरऊ, पँवरिया, पखाउज, खजड़ी नाँच, जनखा का शानदार मंचन किया गया।

तृतीय चरण 'भोजपुरी लोक गायकी' का उद्घाटन इंजी० संजीव गुप्त की भोजपुरी गीतों की पुस्तक 'आवऽगावल जाय' के विमोचन से हुआ तत्पश्चात् विभिन्न लोकगायकी की रसधार प्रवाहित होती रही।

अन्तिम एवं चौथे चरण में 'भोजपुरी कवि सम्मेलन' के शुरुआत में भोजपुरी के सन्त कवि रामजीयावन दास 'बावला' का अभिनन्दन अध्यक्ष, कवि एवं चित्रकार डॉ० महेन्द्र सिंह नीलम के हाथों हुआ। लोकप्रिय कवियों के काव्यपाठ से लोकरस की अमृत बूँदें छलकती रहीं।

कन्नड़ उपन्यास 'कर्तारन कम्मट' का हिन्दी रूपान्तर 'कर्तार की टकसाल' का लोकार्पण समारोह

दिनांक 9 अप्रैल 2011 को मैसूर में, परमपूज्य श्री शिवरात्रि देशिकेंद्र महास्वामीजी की सान्निध्य में, कदलि महिला वेदिके के सहयोग से ख्यात उपन्यासकार डॉ० एच० तप्पेरुद्रस्वामीजी के कन्नड़ में लिखित बृहत् उपन्यास 'कर्तारन कम्मट' का श्रीमती शशिकला सुबबण्णा द्वारा हिन्दी में रूपान्तरित 'कर्तार की टकसाल' का लोकार्पण हुआ।

पुस्तक का विमोचन

वाराणसी। विद्यापीठ के पत्रकारिता विभाग में आयोजित समारोह में पत्रकार प्रेमनाथ चौबे की पुस्तक 'समाचार सम्पादन' का विमोचन विभागाध्यक्ष डॉ० अनिल कुमार उपाध्याय ने किया। अध्यक्षता प्रो० मंजुला चतुर्वेदी ने की।

डॉ० पशुपतिनाथ की कृति का लोकार्पण

पं० बैजनाथ शर्मा प्राच्य विद्या शोध संस्थान और केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय नई दिल्ली के तत्वावधान में डॉ० पशुपतिनाथ उपाध्याय की

कृति 'हिन्दी साहित्य की विविध विधाएँ' का लोकार्पण दक्षिण भारत के सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ० एम० शेषन द्वारा विगत दिनों काव्यशास्त्रीय राष्ट्रीय संगोष्ठी महामायानगर में किया गया।

हिन्दी वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन

भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, देहरादून के राजभाषा अनुभाग द्वारा आयोजित आन्तरिक हिन्दी वैज्ञानिक संगोष्ठियों के क्रम में 32वीं आन्तरिक हिन्दी वैज्ञानिक संगोष्ठी' का आयोजन विगत दिनों संस्थान में किया गया।

संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए संस्थान के कार्यकारी निदेशक श्री यू०सी० अग्रवाल ने कहा कि राजभाषा अनुभाग द्वारा आयोजित ये संगोष्ठियाँ इसलिए महत्त्वपूर्ण हैं कि हिन्दी में विज्ञान के प्रसार से विज्ञान अधिक लोगों तक पहुँचेगा इससे विज्ञान का लोकप्रियकरण तथा राजभाषा दोनों ही अपने उद्देश्य में सफल होंगे

संगोष्ठी का संचालन करते हुए समारोह के संयोजक एवं संस्थान के वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी डॉ० दिनेश चंद्र चमोला ने कहा कि प्रयोगशालाओं व पुस्तकों में बन्द ज्ञान जब इन संगोष्ठियों के माध्यम से जन-जन तक पहुँचेगा तो वैज्ञानिक चेतना के विकास के साथ-साथ प्रौद्योगिकियों के लाभ से आम जन के जीवन स्तर में भी परिवर्तन आएगा।

संगोष्ठी में विविध विषयों पर प्रभावी प्रस्तुतियाँ दी गयीं।

शमशेर शताब्दी समारोह सम्पन्न

''शमशेर बहादुर सिंह हिन्दी और उर्दू दोनों भाषाओं के बड़े कवि थे। गद्यकार भी वे उतने ही बड़े थे। वे इकलौते ऐसे आलोचक हैं जिन्होंने हाली की उर्दू रचना 'मुसद्दस' और मैथिलीशरण गुप्त की हिन्दी रचना 'भारत भारती' की गहराई से तुलना करते हुए दोनों के रिश्ते की पहचान की। इकबाल पर भी हिन्दी में उन्होंने ही सबसे पहले लिखा। वे हिन्दी और उर्दू के बीच किसी भी प्रकार के भेदभाव और टकराव के विरोधी थे। इसीलिए तो उन्होंने कहा था—'वो अपनों की बातें, वो अपनों की खूशबू/हमारी ही हिन्दी हमारी ही उर्दू।' इतना ही नहीं, नितान्त निजी क्षणों मे भी उन्हें उर्दू ज़बान ही याद आती थी। उदाहरण के लिए मुक्तिबोध पर उनकी उर्दू में लिखी कविता को देखा जा सकता है।''

ये विचार हिन्दी समीक्षा के शलाका पुरुष प्रो० नामवर सिंह ने हैदराबाद में आयोजित द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी 'शमशेर शताब्दी समारोह' के उद्घाटन सत्र में बीज व्याख्यान देते हुए व्यक्त किए। यह समारोह उच्च शिक्षा और शोध संस्थान, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा और मौलाना आजाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में सम्पन्न हुआ।

दो दिन के इस समारोह में पूरे दक्षिण भारत में बड़ी संख्या में प्रतिभागी उपस्थित रहे। विभिन्न विचार सत्रों में विद्वान लेखकों व साहित्यकारों ने अपने आलेखों में और वक्तव्यों के माध्यम से शमशेर बहादुर सिंह के व्यक्तित्व और रचनाधर्मिता का विश्लेषण किया।

समापन सत्र में डॉ० नामवर सिंह ने कहा कि ''पिछले दिनों दिल्ली में तथा अन्य स्थानों पर शमशेर पर कई गोष्ठियाँ हुईं परन्तु उनमें पुनरावृत्ति ही अधिक दिखाई दी तथा कविता पर ही अधिक जोर रहा। इसके विपरीत हैदराबाद के इस समारोह की यह उपलब्धि रही कि यहाँ नई बातें हुई, अलग अलग दृष्टि से बातें हुईं, सब विधाओं की बातें हुईं और एक खास बात यह है कि शमशेर की नई रचनाएँ उद्धृत की गईं। वक्ताओं ने हिन्दी और उर्दू दोनों को उद्धृत किया।'' डॉ० नामवर सिंह ने इस तुलना को आगे बढ़ाते हुए कहा कि ''लोग आधा चाँद लिए नाच रहे थे, यहाँ पूरा चाँद देखने को मिला—शमशेर की शमशेरियत का पूरा चाँद।''

समापन सत्र की अध्यक्षता करते हुए डॉ० गंगा प्रसाद विमल ने भी इस बात का समर्थन किया।

रवीन्द्रनाथ टैगोर स्वर्ण शताब्दी

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर के स्वर्ण शताब्दी के उपलक्ष्य में आजमगढ़ के राहुल सांकृत्यायन प्रेक्षागृह में डॉ० कन्हैया सिंह (साहित्यकार) के संरक्षण में एक पाँच दिवसीय स्पन्दन उत्सव का आयोजन किया गया। पूरे कार्यक्रम को प्रतिदिन दो सत्रों में विभक्त किया गया। जिसमें प्रथम सत्र में प्रतिदिन सेमिनार एवं सायंकाल एक नाट्य प्रस्तुति की गई। प्रत्येक दिन के प्रथम सत्र में रवीन्द्रनाथ टैगोर से सम्बन्धित विभिन्न विषयों पर चर्चा की गई तथा प्रत्येक चार दिन अलग-अलग नाटकों की प्रस्तुति की गई। समापन के दिन कवि-सम्मेलन का आयोजन किया गया।

प्रेमचंद की प्रामाणिक कहानी रचनावली का लोकार्पण

''अभी तक प्रेमचंद की कहानियों का प्रतिनिधि और सम्पूर्ण संकलन 'मानसरोवर' को माना जाता था, लेकिन साहित्य अकादेमी द्वारा छह खण्डों में 'प्रेमचंद कहानी रचनावली' के प्रकाशन के बाद अब यह मान्यता बदल जाएगी। प्रेमचंद की कहानियों का अब एकमात्र विश्वसनीय और प्रामाणिक संकलन साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित इस कहानी रचनावली को माना जाएगा'' उक्त विचार प्रसिद्ध समीक्षक गोपाल राय ने कमल किशोर गोयनका द्वारा सम्पादित और साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित 'प्रेमचंद कहानी रचनावली' के लोकार्पण समारोह में मुख्य वक्ता के रूप में प्रकट किये।

इस सन्दर्भ में आयोजित संगोष्ठी में विश्वनाथ तिवारी, भारत भारद्वाज, देवेन्द्र दीपक, कमल किशोर गोयनका ने विचार रखे। श्री गोयनका ने इस महत्त्वपूर्ण सम्पादन की प्रक्रिया को रेखांकित किया।

समकालीन भारतीय दलित साहित्य : क्षितिजों से पार

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा 21 से 23 अप्रैल 2011 के बीच 'समकालीन भारतीय दलित साहित्य' विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। आठ सत्रों में विभाजित इस महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय संगोष्ठी में पूरे देश से आए 30 से ज्यादा दलित लेखकों, विचारकों, पत्रकारों और शिक्षाविदों ने भाग लिया।

पहले दिन उद्घाटन सत्र के अतिरिक्त 'जाति उत्पीड़न और दलित साहित्य' तथा 'आत्मकथा में सृजनात्मक भावाभिव्यक्ति' शीर्षक से दो सत्र हुए, जिनमें पाँच आलेख पढ़े गए।

उद्घाटन सत्र में अध्यक्षीय भाषण देते हुए प्रसिद्ध दलित लेखक और चिन्तक प्रो० तुलसीराम ने कहा कि ''भारतीय दलित साहित्य को देश के वैकल्पिक सामाजिक इतिहास के रूप में देखा जाना चाहिए। इतिहास में यह अहम हिस्सा लम्बे समय से गायब था।'' आगे उन्होंने कहा कि दलित साहित्य लेखन की परम्परा कोई नई नहीं है। बौद्ध काल में भी दलित साहित्य था और मध्य युग में संत साहित्य के रूप में इसकी उपस्थिति थी। आधुनिक भारतीय दलित साहित्य की शुरुआत महाराष्ट्र से साठ के दशक में मानी जा सकती है। संत काल से अब तक के लम्बे अन्तराल में दलित साहित्य उपलब्ध न होने का कारण उन्होंने दलित समाज को शिक्षा से वंचित रखे जाने को बताया। लेकिन उन्होंने स्पष्ट किया कि इस बीच दलित समाज लोककलाओं और लोकनाट्य के जरिए अपने को अभिव्यक्त करता रहा। इसलिए सारी लोककलाओं एवं लोक नाट्य के जनक के रूप में भी दलित और आदिवासी समाज की महत्त्वपूर्ण भूमिका को पहचाना जाना जरूरी है।

सुप्रसिद्ध मराठी लेखक और योजना आयोग के सदस्य नरेन्द्र जाधव ने अपने उद्घाटन व्याख्यान में कहा कि आधुनिक भारतीय दलित साहित्य की नींव बाबा अम्बेडकर ने दलितों को शिक्षा का अधिकार दिलाकर रखी थी। हमारा साहित्य नये समाज को रचने के लिए विद्रोह का प्रतीक था। आज भारतीय साहित्य का जो वैश्विक रूप है वह भारतीय दलित साहित्य की वजह से है। आरम्भिक वक्तव्य में लक्ष्मण गायकवाड़ ने कहा कि दलित साहित्य हमारे समाज को सच्चाई का आईना दिखा रहा है। अपने स्वागत भाषण में साहित्य अकादेमी के सचिव अग्रहार कृष्णमूर्ति ने कहा कि पिछले वर्षों में दलित साहित्य ने अपना नया सौन्दर्यशास्त्र बनाया है और उसका सम्मान होना चाहिए। उसको केवल दलित साहित्य की परिधि में रखना ठीक नहीं होगा।

संगोष्ठी के विभिन्न सत्रों में 'जाति उत्पीड़न और दलित साहित्य', 'दलित आत्मकथाओं में सृजनात्मक भावाभिव्यक्ति', 'दलित संत साहित्य एवं सामाजिक सुधार', 'समकालीन दलित रंगभूमि एवं लोककला' तथा 'दलित स्त्री साहित्य' आदि पर विद्वानों द्वारा आलेख प्रस्तुत किये गये तथा विचार रखे गये।

दक्षिण की प्रसिद्ध लेखिका, पूर्व प्रशासनिक अधिकारी और राजनीति में सक्रिय पी० शिवकामी ने दलित लेखिका होने, एक दलित महिला प्रशासनिक अधिकारी होने और राजनीति में सक्रिय होने पर आई मुश्किलों की विस्तार से चर्चा की। महाराष्ट्र से आए योगीराज बागुल ने मराठी में दलित महिलाओं द्वारा लिखी गई आत्मकथाओं की विस्तार से चर्चा की।

सत्र की अध्यक्ष सुकृता पॉल कुमार ने कहा कि लोकतंत्र जिन अधिकारों को महिलाओं को नहीं दे पाता है लेखिकाएँ उन्हें अपने लेखन द्वारा पाने की कोशिश करती हैं।

संगोष्ठी के अन्तिम दिन के सत्रों के विषय 'भूमण्डलीकरण, सांस्कृतिक अस्मिता एवं दलित साहित्य', 'दलित साहित्य का सौन्दर्य शास्त्र' तथा 'दलित साहित्य और आदिवासी समाज' पर विद्वानों ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

लेखक सबकी लड़ाई लड़ता है — हिमांशु जोशी

'लेखक उन लोगों की लड़ाई लड़ता है जिनकी लड़ाई कोई नहीं लड़ता और जो खुद भी अपनी लड़ाई नहीं लड़ सकते' उक्त विचार प्रसिद्ध लेखक और पत्रकार हिमांशु जोशी ने साहित्य अकादेमी द्वारा 15 अप्रैल 2011 को आयोजित 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम में व्यक्त किए। फ्रांस के लेखक ज्याँ पाल सात्र और रूस के लेखक सोल्ज़ेनित्शिन के उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि सच्चे लेखक को अपने राष्ट्र के अच्छे भविष्य के लिए अपनी परवाह न करते हुए लम्बी लड़ाई लड़ने के लिए तैयार रहना चाहिए।

कार्यक्रम के आरम्भ में साहित्य अकादेमी के उपसचिव ब्रजेन्द्र त्रिपाठी ने हिमांशु जोशी का संक्षिप्त परिचय देते हुए कहा कि उन्होंने अपने लेखन में पर्वतीय प्रदेशों की सच्ची झलक से लेकर स्वतंत्र भारत की बदलती-बनती तस्वीर के साथ-साथ भूमण्डलीकरण के बदलावों पर भी पैनी दृष्टि रखी है।

डॉ० नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम' की पुस्तकों का लोकार्पण

डॉ० नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम' की सद्य: प्रकाशित आठ पुस्तकों का लोकार्पण स्वामी विवेकानन्द केन्द्र जयपुर में राजस्थान के पूर्व राज्यपाल न्यायमूर्ति टिबरेवाल, साहित्यकार डॉ० मनोहर प्रभाकर, देवर्षि कलानाथ शास्त्री, डॉ० हरिराम आचार्य, श्री वेदव्यास, श्री चंपालाल रांका आदि ने संयुक्त रूप से किया।

इसी अवसर पर विवेकानन्द सेवा संस्थान, जयपुर ने डॉ० 'कुसुम' को 'Life Time Achievement Award' भी प्रदान किया।

'रंगों के आसपास' का लोकार्पण

कविता संग्रह 'रंगों के आसपास' का लोकार्पण एक गरिमामय समारोह में वरिष्ठ आलोचक डॉ० विजय बहादुर सिंह, कवि-नाटककार राजेश जोशी तथा कथाकार-विज्ञानकर्मी संतोष चौबे ने मिलकर किया। भोपाल स्थित स्वराज भवन में वनमाली सृजन पीठ द्वारा यह कार्यक्रम आयोजित किया गया।

शोधग्रन्थ आधारित पुस्तक का लोकार्पण

'हिन्दी भाषा तथा साहित्य में डॉ० कैलाशचंद्र भाटिया का योगदान' शीर्षक से डॉ० चित्रलेखा का शोध कार्य पुस्तकाकार रूप में अलीगढ़ स्थित प्रो० कैलाशचंद्र भाटिया के निवास पर लोकार्पित किया गया। कालीकट विश्वविद्यालय, केरल के हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो० आर० सुरेंद्रन ने पुस्तक का लोकार्पण किया।

राष्ट्रीय संगोष्ठी : अज्ञेय-शती

अज्ञेय की जन्मशताब्दी के उपलक्ष्य में 3 से 5 मार्च तक 'अज्ञेय : पुन:पाठ की आवश्यकता' विषय पर केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, क्षेत्रीय कार्यालय, शिलाँग तथा हिन्दी विभाग, पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग की सहभागिता से त्रि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन नेहू के कुलपति प्रो० अमरनाथ राय ने किया। मुख्य अतिथि एवं बीज व्याख्याता के रूप में प्रसिद्ध आलोचक प्रो० नामवर सिंह उपस्थित थे। हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डॉ० माधवेन्द्र प्रसाद पाण्डेय ने अतिथियों का स्वागत किया। संगोष्ठी में कुल सात शैक्षणिक सत्र थे और 33 वक्ताओं ने अज्ञेय के काव्य विषयक अपने-अपने मंतव्य शोध पत्र के माध्यम से प्रस्तुत किए।

डॉ० भगवतशरण उपाध्याय : शताब्दी

'जनपद हिन्दी साहित्य सम्मेलन' जौनपुर के तत्वावधान में प्रसिद्ध साहित्यकार और इतिहासकार डॉ० भगवतशरण उपाध्याय के जन्म शताब्दी वर्ष पर एक विचारगोष्ठी आयोजित हुई। कार्यक्रम के प्रारम्भ में सभाजीत द्विवेदी प्रखर ने तथा लल्लन प्रसाद वर्मा ने भगवतशरण उपाध्याय के व्यक्तित्व और कृतित्व का संक्षिप्त परिचय दिया।

देवेन्द्र विमल ने भगवतशरण उपाध्याय के यात्रा-साहित्य की चर्चा की। वरिष्ठ साहित्यकार अजय कुमार ने भगवतशरण उपाध्याय के चर्चित निबन्ध 'अजन्ता और एलोरा' का वाचन किया। डॉ० धीरेन्द्र कुमार पटेल ने कहा कि भगवतशरण उपाध्याय और वासुदेवशरण अग्रवाल इतिहास लिखते-लिखते साहित्य अधिक लिखने लगते हैं। भगवतशरण उपाध्याय को हम सांस्कृतिक इतिहासकार कह सकते हैं। मुख्य वक्ता डॉ० सुनील विक्रम सिंह ने कहा कि अगाध पाण्डित्य, अद्भुत स्मरण शक्ति और ओजस्वी वक्तव्य का संगम है भगवतशरण उपाध्याय का व्यक्तित्व। उपाध्यायजी ने इतिहास और संस्कृति की वैज्ञानिक व्याख्या की।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे प्रोफेसर आशुतोष उपाध्याय ने कहा कि इतिहासकार जब साहित्यिक भी होता है तो उसकी प्रशंसा होनी ही चाहिए। भगवतशरण जी का इतिहासकार और साहित्यकार व्यक्तित्व समानान्तर चलता रहता है।

डॉ० रामविलास शर्मा की स्मृति

डॉ० रामविलास शर्मा फाउंडेशन की ओर से डॉ० रामविलास शर्मा के 98वें जन्मदिवस के अवसर पर दिल्ली में एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। चर्चा का विषय था—'हमारी संस्कृति के स्वस्थ प्रतिमान और डॉ० रामविलास शर्मा'। दिवंगत आलोचक के सुपुत्र विजयमोहन शर्मा ने कार्यक्रम की शुरुआत की और प्रो० रविभूषण ने 'रामविलास शर्मा-जुआरी पूँजी के विरुद्ध' पर व्याख्यान प्रस्तुत किया।

अध्यक्षता प्रो० नित्यानन्द तिवारी ने की और कार्यक्रम को गरिमा प्रदान की डॉ० रामविलास शर्मा के भ्राता रामचरण शर्मा ने। नाट्य संस्था 'गवाह द विटनैस' द्वारा भारतेन्दु हरिश्चंद्र रचित नाटक 'अंधेर नगरी चौपट राजा' का मंचन भी किया गया।

डॉ० लक्ष्मीनारायण लाल स्मृति व्याख्यान

प्रख्यात कथाशिल्पी एवं नाटककार डॉ० लक्ष्मीनारायण लाल के जन्म दिवस पर गाँधी शान्ति प्रतिष्ठान, नई दिल्ली में 'समकालीन कथा साहित्य : वर्तमान परिदृश्य' विषय पर व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता थे डॉ० महीप सिंह जिन्हें इस अवसर पर डॉ० लक्ष्मीनारायण लाल स्मृति सम्मान सहित ग्यारह हजार रुपए की राशि भेंट की गई। अध्यक्षता डॉ० गंगाप्रसाद विमल ने की। डॉ० रवि शर्मा और डॉ० सुधेश ने डॉ० लाल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय तथा कुछ संस्मरण प्रस्तुत किए।

अमेरिका में हिन्दी उत्सव

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी समिति का 15वाँ अधिवेशन धूमधाम से अमेरिका के ओहाओ प्रान्त के क्लीवलैंड शहर में 29-30 अप्रैल 2011 को सम्पन्न हुआ। दो दिन के इस अधिवेशन में 350 से अधिक हिन्दी प्रेमी सम्मिलित हुए। इस अधिवेशन ने अमेरिका की भूमि पर हिन्दी का नया कीर्तिमान स्थापित किया। जिसमें हिन्दी प्रेमियों ने दो दिन कवि सम्मेलन, हिन्दी की यात्रा का मनोरम नाटक एवं अमेरिका में हिन्दी शिक्षण पर ज्ञानवर्धक सत्रों का आनन्द उठाया।

ब्रासवैल सीनियर हाई स्कूल क्लीवलैंड के भव्य प्रेक्षागार में 29 अप्रैल शुक्रवार की शाम को क्लीवलैंड के 60 बच्चों एवं युवाओं ने हिन्दी भाषा की यात्रा जो कि संस्कृत में आरम्भ होकर पाली, प्राकृत, बृजभाषा, अवधी एवं खड़ी बोली तक जाती है एवं तुलसी सूर से लेकर छायावादी काव्य से गुजरती हुई आधुनिक साहित्य तक पहुँचती है प्रदर्शित की। कलाकारों ने हिन्दी की यात्रा एक नृत्य नाटिका के माध्यम से प्रस्तुत की थी। कार्यक्रम सभी हिन्दी प्रेमियों को अचम्भित एवं गर्वोन्नत करने वाला अनुभव था क्योंकि इसे अमेरिका में जन्में एवं पले बच्चों ने किया था। तत्पश्चात् अमेरिका के 15 कवियों ने काव्य पाठ किया जो कि दो घण्टे तक चला।

अधिवेशन के मुख्य अतिथि राजनयिक एवं कवि डॉ० केशरीनाथ त्रिपाठी भारत से पधारे थे।

अमेरिका और भारत से पधारे हिन्दी रचनाकारों की कुछ पुस्तकों जिनमें 'सलाम कानपुर', 'प्रवासी भारतीय' (डॉ० प्रदीप दीक्षित), 'कटे हाथों के हस्ताक्षर' एवं 'वत्सला' (डॉ० कमल मुसद्दी) व गुलाब खण्डेलवाल की पुस्तकों का विमोचन भी किया गया।

मनोज जैन 'मधुर' को 'नटवर गीत सम्मान'

शोधपरक सत्-साहित्यिक मासिक पत्रिका 'साहित्य सागर' द्वारा गीत विधा के लिए राष्ट्रीय स्तर पर प्रवर्तित 'नटवर गीत सम्मान' (रुपये 11000) हेतु इस वर्ष भोपाल के युवा गीतकार श्री मनोज जैन 'मधुर' को प्रतियोगिता के माध्यम से चुना गया है।

'खाली किताब का जादू' व 'प्रवास गंगा' लोकार्पित

30 अप्रैल को नई दिल्ली के इण्डिया इंटरनेशनल सेंटर में श्री कृष्ण बलदेव वैद की दो पुस्तकों का लोकार्पण श्री अशोक वाजपेयी द्वारा किया गया। कार्यक्रम के दूसरे चरण में पर्यावरणविद् श्री अनुपम मिश्र को 'वैद पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। समारोह का आयोजन पेंगुइन बुक्स इण्डिया, यात्रा बुक्स और रजा फाउंडेशन ने संयुक्त रूप से किया था।

उपराष्ट्रपति द्वारा पुस्तक विमोचन

20 अप्रैल को उपराष्ट्रपति निवास में डॉ० कपिला वात्स्यायन की पुस्तक 'दरभंगा गीत गोविंद' का विमोचन उपराष्ट्रपति महामहिम डॉ० हामिद अंसारी ने किया। इस पुस्तक में प्रेम और रहस्य की काव्यबद्ध पौराणिक परम्परा, भारतीय संस्कृति और रीति-रिवाजों को विविधता के साथ प्रस्तुत किया गया है।

'चलती चाकी' का लोकार्पण सम्पन्न

18 अप्रैल को इण्डिया इंटरनेशनल सेंटर द्वारा श्री सूर्यनाथ सिंह के पहले उपन्यास 'चलती चाकी' का लोकार्पण प्रो० नामवर सिंह ने किया। कवि श्री अशोक वाजपेयी तथा प्रो० कृष्णदत्त पालीवाल ने उपन्यास की कथा वस्तु पर अपने विचार प्रकट किए।

'रोशनी का घट' कृति का लोकार्पण

10 मई को अलीगढ़ में श्री अशोक अंजुम के व्यक्तित्व व कृतित्व पर आधारित तथा श्री जितेन्द्र जौहर द्वारा सम्पादित कृति का लोकार्पण पद्मभूषण श्री नीरज ने किया।

साहित्य निकेतन की स्वर्णिम यात्रा आयोजित

30 अप्रैल को नई दिल्ली के हिन्दी भवन में हिन्दी साहित्य निकेतन की 50 वर्ष की स्वर्णिम यात्रा में देश के विभिन्न क्षेत्रों से 400 साहित्यकार और ब्लॉगर उपस्थित हुए। कार्यक्रम का उद्घाटन उत्तराखण्ड राज्य के मुख्यमंत्री डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' ने किया। जिन्होंने साहित्यकार श्री गिरिराजशरण अग्रवाल एवं अध्यक्षा सुश्री मीना अग्रवाल एवं एवं उनके परिवार को बधाई दी। सर्वश्री रामदरश मिश्र, प्रभाकर श्रोत्रिय, अविनाश वाचस्पति ने अपने विचार प्रकट किए। दूसरे सत्र में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के छात्रों ने कालजयी साहित्यकार रविन्द्रनाथ टैगोर की बाँग्ला नाटिका का हिन्दी रूपान्तर प्रस्तुत किया।

आचार्य विष्णुकांत शास्त्री स्मृति व्याख्यानमाला सम्पन्न

1 मई को कोलकाता में महाजाति सदन एनेक्सी में कुमारसभा पुस्तकालय के तत्त्वावधान में 'आचार्य विष्णुकांत शास्त्री स्मृति व्याख्यानमाला' के अन्तर्गत 'हिन्दी गजल : विचार भंगिमा और संवेदना' विषय पर आयोजित किया गया। डॉ० शिवओम अंबर और डॉ० बुद्धिनाथ मिश्र ने गजल से सम्बन्धित अपने विचार प्रकट किए।

वाराणसी में साहित्य विषयक संगोष्ठी

विगत दिनों साहित्य संघ के तत्त्वावधान में वाराणसी में साहित्य विषयक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। समारोह की मुख्य अतिथि प्रख्यात लेखिका डॉ० सूर्यबाला थीं। अध्यक्षता श्री धर्मशील चतुर्वेदी ने की तथा साहित्य से सम्बन्धित अपने विचार प्रकट किए। समारोह में सर्वश्री रामसुधार सिंह, श्रद्धानन्द, वेदप्रकाश पाण्डेय, संगीता श्रीवास्तव आदि ने भी विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम के अन्त में कवियों ने काव्य पाठ किया। अतिथियों का स्वागत श्री पद्माकर चौबे ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन श्री केदनारथ राय एवं संचालन श्री जितेन्द्रनाथ मिश्र ने किया।

स्मृति सभा का आयोजन

19 अप्रैल को साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा आचार्य जानकी वल्लभ शास्त्री स्मृति सभा का आयोजन किया गया। जिसमें सर्वश्री नामवर सिंह, अशोक वाजपेयी और डॉ० कृष्णदत्त पालीवाल ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए। स्मृति-सभा में सर्वश्री मदन कश्यप, अनामिका, राजेन्द्र गौतम, गंगा प्रसाद विमल, भारत भारद्वाज, उद्भ्रांत ने भी साथ की अपनी स्मृतियों को साझा किया। इस अवसर पर सर्वश्री हिमांशु जोशी, कैलाश वाजपेयी, अपूर्वानंद, देवेन्द्र चौबे, रजनीश मिश्र तथा अन्य कई महत्त्वपूर्ण लेखक और पत्रकार उपस्थित थे। धन्यवाद ज्ञापन श्री ब्रजेन्द्र त्रिपाठी ने किया।

श्रद्धांजलि सभा आयोजित

18 अप्रैल को दिल्ली में हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा डॉ० जानकी वल्लभ शास्त्री की स्मृति में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता वरिष्ठ लेखिका श्रीमती मृदुला सिन्हा ने की।

स्मरण गोष्ठी का आयोजन

24 अप्रैल को बर्मिंघम यू०के० की गीतांजलि बहुभाषी साहित्यिक समुदाय के मुख्य कार्यालय पर प्रसिद्ध कवि, उपन्यासकार एवं क्रान्तिकारी विचारों के लेखक श्री शैलेश मटियानी पर एक स्मरण गोष्ठी का आयोजन किया गया। आरम्भ में एक मिनट का मौन रखा गया उसके बाद उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर चर्चाएँ हुईं।

द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी सम्पन्न

विगत दिनों अहमदाबाद के 'उमिया आर्ट्स एण्ड कॉमर्स कॉलेज फॉर गर्ल्स' में यू०जी०सी० एवं ओ०एन०जी०सी० के संयुक्त तत्त्वावधान में द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। समारोह में सर्वश्री नामवर सिंह, तुलसीराम, रामदरश मिश्र, मैत्रेयी पुष्पा की उपस्थिति महत्त्वपूर्ण रही। उद्घाटन सत्र के अध्यक्ष श्री भोलाभाई पटेल थे। प्रो० नामवर सिंह ने बीज वक्तव्य दिया। दूसरी गोष्ठी के अध्यक्ष श्री महावीर सिंह चौहान थे। सर्वश्री शैलजा सिंह, मालती दुबे और डॉ० नवनीत चौहान आदि ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए। तृतीय गोष्ठी के अध्यक्ष श्री रघुवीर चौधरी थे। चौथी गोष्ठी की अध्यक्षा सुश्री मैत्रयी पुष्पा थीं, सर्वश्री मृदुला पारीक, रेखा शर्मा, दक्षा जोशी, कीर्तिकमल वाघेला तथा अनूपा चौहान ने प्रपत्र पठन किया। अन्तिम गोष्ठी के अध्यक्ष श्री तुलसीराम थे। समापन संगोष्ठी की अध्यक्षता प्रो० नामवर सिंह ने की।

लंदन में कथा गोष्ठी का आयोजन

9 मई को कथा यू०के० ने लंदन के उपनगर एजवेअर में कथा गोष्ठी का आयोजन किया। श्रीमती जकीया जुबैरी ने अपनी कहानी 'मन की साँकल' और सुश्री नीना पॉल ने 'आखिरी गीत' का पाठ किया।

पुस्तक परिचय

नाटक बनती देशी/ विदेशी चित्र/ विचित्र कहानियाँ

डॉ० भानुशंकर मेहता

प्रथम संस्क० : 2011 ई०

पृष्ठ : 116

सजि. : रु० 200.00 ISBN : 978-81-89498-45-0
अजि. : रु० 80.00 ISBN : 978-81-89498-46-7
प्रकाशक : अनुराग प्रकाशन, वाराणसी

विलक्षण प्रतिभा से सम्पन्न डॉ० भानुशंकर मेहता की यह कृति विभिन्न भाषाओं के लेखकों द्वारा लिखी गई दिलचस्प और मनोरंजक कहानियों का नाट्य रूपांतर है। बंगला, गुजराती, मराठी, अंग्रेजी और हिन्दी। इस संकलन में रूपांतरित नाटकों की संख्या बीस है। सभी रुचिकर हैं और पाठक तथा दर्शक से तादात्म्य स्थापित करने में सक्षम हैं। किसी नाटक की खास विशेषता यह होती है कि वह दर्शक से किस हद तक संप्रेषित होता है या नाटक और दर्शक के बीच साधारणीकरण होता है। दर्शक नाटक के पात्रों को कितना जी पाता है। इस संकलन के नाटक इस कसौटी पर पूर्णरूप से खरे उतरते हैं। सभी नाटक मंचित होने योग्य तो हैं ही, पढ़कर आनंद उठाने योग्य भी हैं। इन्हें कहानी और उपन्यास की तरह पढ़कर रोमांचित हुआ जा सकता है, मन को रंजित किया जा सकता है।

नाटक बनती बाल कथाएँ

डॉ० भानुशंकर मेहता

प्रथम संस्क० : 2011 ई०

पृष्ठ : 148

सजि. : रु० 250.00 ISBN : 978-81-89498-47-4
अजि. : रु० 120.00 ISBN : 978-81-89498-48-1
प्रकाशक : अनुराग प्रकाशन, वाराणसी

बहुमुखी प्रतिभा के धनी डॉ० भानुशंकर मेहता की प्रतिभा का एक कोण उनके नाटककार और रंगकर्म में निखरता है। डॉ० मेहता की अन्य पुस्तकों की तरह यह पुस्तक भी रोचक, मनोरंजक और ज्ञानवर्धक है। बच्चों के लिए एक अनुपम भेंट है और रंगमंच के लिए बहुमूल्य उपहार भी है। ये बाल नाटक आसानी से और सफलतापूर्वक मंचस्थ किए जा सकते हैं। बच्चे इसे पढ़ेंगे, खेलेंगे और आनन्दित होंगे। यह एक सच्चाई है कि बाल नाटक जितने खेले गए हैं, उतने उनके संकलन नहीं हैं। इस पुस्तक के द्वारा इस कमी को पूरा करने का एक छोटा सा प्रयास किया गया है। यह पाठकों को बाल-नाटकों के माध्यम से बंगला और गुजराती रचना संसार तक पहुँचा सकती है। विश्वप्रसिद्ध पंचतंत्र की कहानियों तक ले जा सकती है। चीनी और अंग्रेजी कथा क्षेत्र का भ्रमण करा सकती है। प्रसिद्ध अरबी कथा-संसार में एक बार फिर लौटा सकती है।

भोजराज

(मालवाधीश परमार राजा भोज प्रथम)

डॉ० भगवतीलाल राजपुरोहित

द्वितीय संस्क० : 2011 ई०

पृष्ठ : 84

सजि. : रु० 100.00 ISBN : 978-81-7124-788-2
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

धाराधीश राजा भोज भारतीय ज्ञान-विज्ञान, साहित्य, संस्कृति और इतिहास के मानदण्ड हैं। उन्होंने तलवार के क्षेत्र में कभी समझौता नहीं किया, पर लेखनी के क्षेत्र में सदा समन्वय का मार्ग स्वीकार किया। अपने 55 वर्ष 7 मास 3 दिन के शासन काल में वे वीरता और विद्वत्ता के प्रमाण बन गये। साहित्य, ज्योतिष, आयुर्वेद, कोश, व्याकरण, राजनीति, धर्मशास्त्र, शिल्प, दर्शन, विज्ञान, रसायन आदि अपने युग के प्राय: सभी ज्ञात विषयों पर भोज ने साधिकार जो अनेक ग्रन्थ से रचे उनमें से 90 से अधिक के नाम ज्ञात हैं। इनमें से प्राय: आधे ग्रन्थ सुलभ भी हैं। उनमें से उनकी कतिपय पुस्तकें ही प्रकाशित और उनमें से भी बहुत कम सुलभ हैं। राजा भोज के ताम्रपत्र, शिलालेख, भवन, मन्दिर, मूर्तियाँ आदि पुरा प्रमाण प्राप्त होते हैं।

भारतीय परम्परा में विक्रमादित्य के बाद राजा भोज का ही सर्वाधिक स्मरण किया जाता है। राजा भोज न केवल स्वयं विद्वान अपितु विद्वानों के आश्रयदाता भी थे। इतिहास-पुरुष होने पर भी वे अपनी अपार लोकप्रियता के कारण मिथक पुरुष हो गये। भारतीय परम्परा के ऐसे शलाका पुरुष का प्रामाणिक परिचय इस भोजराज ग्रन्थ में संक्षेप में दिया जा रहा है। हिन्दी में यह पहली पुस्तक है जिसमें साहित्य और संस्कृति के प्रकाश स्तम्भ राजा भोज को पूरी तरह से पहचानने की कोशिश की गयी है। वाग्देवी के आराधक तथा असि और मानि के धनी भोज को समझने के लिए यह ग्रन्थ सबके लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

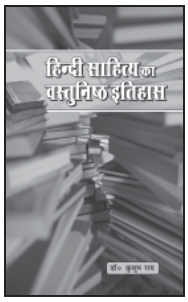

हिन्दी साहित्य का वस्तुनिष्ठ इतिहास

[दसवीं शताब्दी से उन्नीसवीं शताब्दी तक]

डॉ० कुसुम राय

द्वितीय संस्क० : 2011 ई०

पृष्ठ : 592

सजि. : रु० 500.00 ISBN : 978-81-7124-804-9
अजि. : रु० 250.00 ISBN : 978-81-7124-624-3
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

वैसे तो हिन्दी साहित्य के इतिहास की कई पुस्तकें उपलब्ध हैं। लेकिन प्रश्नोत्तर शैली में लिखा गया यह पहला इतिहास-ग्रन्थ है। इससे छात्रों और शोधार्थियों का रास्ता काफी सुगम हो गया है क्योंकि लिखित और मौखिक परीक्षाओं में वस्तुनिष्ठ प्रश्न ही पूछे जाते हैं।

अब छात्रों और शोधार्थियों को विभिन्न इतिहास-ग्रन्थों का अध्ययन नहीं करना पड़ेगा क्योंकि विदुषी लेखिका ने लगभग सभी इतिहास-लेखक विद्वानों के मतों का समावेश इस पुस्तक में किया है। यह पुस्तक पढ़ने के बाद छात्र इस तरह की अटकलों से भी बच जाएँगे कि परीक्षा में किस तरह के सवाल पूछे जा सकते हैं।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल, डॉ० रामकुमार वर्मा और डॉ० गणपतिचन्द्र गुप्त से लेकर अब तक के हिन्दी के सभी विद्वानों के मत इस पुस्तक में समाविष्ट हैं, इसलिए सन्दर्भ ग्रन्थ के रूप में उन्हें इन पुस्तकों के पढ़ने की आवश्यकता नहीं रह गई है। भाषा-विज्ञान के छात्रों के लिए भी यह पुस्तक काफी उपयोगी है। हिन्दी भाषा के विकास के विभिन्न सोपानों का परिचय कराया गया है। 'पूर्व पीठिका' शीर्षक के अन्तर्गत भारोपीय परिवार से हिन्दी भाषा का सम्बन्ध, भारतीय आर्य भाषाओं का अनुभव, लौकिक संस्कृत, प्राकृत, पालि और अपभ्रंश से खड़ी बोली हिन्दी के विकास और हिन्दी भाषा की विभिन्न बोलियों का सम्यक विवेचन किया गया है।

लेखिका ने साहित्य के इतिहास-लेखन की समस्याओं पर विस्तार से प्रकाश डाला है और विभिन्न आधिकारिक विद्वानों के विचार उद्धृत किए हैं। इसमें हर सम्भव पठनीय सामग्री देकर पुस्तक को छात्रोपयोगी बनाने का भरसक प्रयास किया है और इसमें वह पूरी तरह सफल हुई हैं।

डॉ० कुसुम राय के गहन शोध और अध्ययन का परिणाम है यह पुस्तक जिसमें उन्होंने आदिकाल से लेकर रीतिकाल तक का सबकुछ समेट लिया है।

कबीर वाङ्मय

खण्ड – 1 : **रमैनी**

पंचम संस्करण : 2011 ई०

सजि. : रु० 150.00

ISBN : 978-81-7124-805-6

अजि. : रु० 60.00

ISBN : 978-81-7124-806-3

पृष्ठ : 176

खण्ड – 2 : **सबद**

पंचम संस्करण : 2011 ई०

सजि. : रु० 400.00

ISBN : 978-81-7124-807-0

अजि. : रु० 250.00

ISBN : 978-81-7124-808-7

पृष्ठ : 560

खण्ड – 3 : **साखी**

पंचम संस्करण : 2011 ई०

सजि. : रु० 300.00

ISBN : 978-81-7124-809-4

अजि. : रु० 160.00

ISBN : 978-81-7124-810-0

पृष्ठ : 380

सम्पादक

डॉ० जयदेव सिंह **डॉ० वासुदेव सिंह**

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

कबीर संत-काव्य-धारा के सर्वाधिक सशक्त प्रतिमान थे। परमतत्त्व उनके दर्शन की पृष्ठभूमि था और तत्कालीन धर्म तथा सम्प्रदायों के रूढ़िवाद से ऊपर उठकर उन्होंने मानव चेतना को नयी दिशा प्रदान की।

इन सबके लिए कबीर ने जिन प्रतीकों का सहारा लिया, भाषा को जो अर्थवत्ता दी, साहित्य तथा दर्शन के जिन नये आयामों को प्रतिष्ठित किया, उसका गम्भीर अध्ययन, अनुशीलन तथा रमैनी, साखी, सबदों की भावार्थबोधिनी व्याख्या कबीर वाङ्मय का प्रमुख प्रतिपाद्य है।

कबीर-वाणी रमैनी, सबद और साखी तीन रूपों में अभिव्यक्त हुई है। कबीर वाणी के अनेक पाठ मिलते हैं। विद्वान सम्पादकों ने कबीर वाणी के समस्त पाठों को सामने रख और कबीर सम्प्रदाय में प्रचलित पाठों और शब्दों पर विचार करते हुए यह प्रामाणिक संस्करण प्रस्तुत किया है।

फणीश्वरनाथ रेणु और उनका कथासाहित्य

रागिनी वर्मा

द्वितीय संस्क० : 2011 ई०

पृष्ठ : 304

सजि. : रु० 400.00 ISBN : 978-81-7124-803-2

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

'रेणु' ने एक कुशल शिल्पी की भाँति अपनी रचनाओं का ताना-बाना अपनी विशिष्ट शैली में सँवारा है। शृंगार के माधुर्य के साथ-साथ पात्र के दाह और करुणा को जीवन्त रूप में उभारना उनकी शैली की विशेषता है। अतीत की स्मृति और वर्तमान के वैषम्य को व्यंग्यात्मक शैली में प्रस्तुत करने की कला में वे बेजोड़ हैं। उनके व्यंग्य में मात्र तीखापन ही नहीं है। वरन् हास-परिहास का भी पुट है। वे हृदय से एक संवेदनशील कवि हैं, इसीलिए उन्हें कान्तासम्मत शैली में भी कथ्य प्रस्तुत करने की कुशलता प्राप्त है। जीवन में कई बार मरणान्तक बीमारियों से ग्रस्त होकर बार-बार जीवित बचे 'रेणु' ने जीवन को भी उपहास और व्यंग्य का विषय बना लिया है। वे प्रकृत्या विनोदी स्वभाव के जीव थे और जादू-टोने एवं तंत्र-मंत्र में विश्वास रखते थे, इसीलिए उन्होंने इन अंधविश्वासों का खण्डन न करके अपने ग्रामीण पात्रों के तन-मन और व्यवहार में इन्हें प्रदर्शित किया।

रेणु के शब्दों में ''मैंने जिन शब्दों का इस्तेमाल किया, जैसी भाषा लिखी, क्या पता उसको लोग कबूल करेंगे या नहीं करेंगे...इसलिए मैंने उसे आँचलिक उपन्यास कह दिया। उसके बाद तो लोगों ने एक खाँचा ही बना दिया 'आँचलिक' का।''

रेणु की रचनाओं में ग्रामीण जीवन अपनी समस्त वास्तविकताओं के साथ प्रतिबिम्बित होता है।

साहित्यकारों के हास्य-व्यंग्य

[कवियों, लेखकों, साहित्यकारों तथा राजनीतिज्ञों के मनोरंजक प्रसंगों का अपूर्व संग्रह]

डॉ० भवानीलाल भारतीय

द्वितीय संस्करण : 2011 ई०

पृष्ठ : 104

सजि. : रु० 125.00 ISBN : 978-81-89498-42-9

प्रकाशक : अनुराग प्रकाशन, वाराणसी

साहित्य शास्त्रियों ने नवरसों में हास्य का प्रमुख स्थान माना है। भक्ति रस में आपाद मस्तक रंगे सूरदास और गोस्वामी तुलसीदास जैसे भक्त कवियों ने भी यथा प्रसंग स्वकाव्य में हास्य और व्यंग्य के छींटे बिखेरे हैं। भारतेन्दुकालीन साहित्यकारों का गद्य-पद्य, यत्र-तत्र हास्य तथा व्यंग्य के तत्त्वों से सुरभित है। प्रस्तुत ग्रन्थ में जहाँ हिन्दी तथा कतिपय भारतीय भाषाओं के लेखक-साहित्यकारों के हास्य प्रसंग संग्रहीत हैं, वहीं अंग्रेजी साहित्य के हास्य कणों को भी स्थान मिला है। राजनीति का क्षेत्र भले ही कंटकाकीर्ण तथा विषम प्रतीत होता हो किन्तु प्रगल्भ राजनीति कर्मी अपने वक्तव्यों तथा लेखन से यदा-कदा, यत्र-तत्र हास्य की फुहारें छोड़ते दिखाई देते हैं। इन रोचक प्रसंगों को पढ़ना आरम्भ कर आप अन्त तक विस्मय विमुग्ध रहेंगे।

अतीन्द्रिय लोक

गोविन्द प्रसाद श्रीवास्तव

द्वितीय संस्करण : 2011 ई०

पृष्ठ : 128

अजि. : रु० 60.00 ISBN : 978-81-7124-802-5

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

हम सबके जीवन में कई बार ऐसी घटनाएँ घटती हैं जिनका उत्तर बुद्धि की तुला पर नहीं दिया जा सकता। ऐसी घटनाओं को हम केवल मूक-दर्शक के रूप में देखते हैं और विस्मित होते हैं। हमारी इन्द्रियाँ जिसे प्रत्यक्ष रूप से देख रही हैं, सुन रही हैं और जिनका समाधान या उत्तर बुद्धि की कसौटी पर है—ऐसी सभी घटनाएँ—ऐसे सभी सुखद-दुःखद अनुभव अलौकिक कहे जायेंगे।

इसका तात्पर्य यह हुआ कि ऐसी सभी घटनाएँ जिनको हमारी बुद्धि अपनी तुला पर उत्तरित नहीं कर सकती है कि ये घटनाएँ किस कारण से घटित हुईं वे अलौकिक घटनाएँ हैं। इनका कोई समाधान हमारे पास नहीं है या यों कहें कि वे हमारी इन्द्रियों के समझने की क्षमता से परे की घटनाएँ हैं। वे एक ऐसे लोक से जुड़ी प्रतीत होती हैं जहाँ हमारी बुद्धि संतोषजनक समाधान ढूँढ़ने में असमर्थ हो जाती है।

इन्द्रियों द्वारा सन्तोषजनक ढंग से ऐसी घटनाओं का कोई हल मानव-मस्तिष्क को नहीं मिलता। इसलिये इस प्रकार घटनाओं को हम 'अतीन्द्रिय लोक' से सम्बद्ध मानते हैं अर्थात् ऐसी विस्मित करने वाली घटनाएँ उस लोक से सम्बद्ध हैं जिसमें हमारी इन्द्रियों की पहुँच नहीं है। इन्द्रियों से इतर या परे होने के कारण वह अतीन्द्रिय लोक है।

कबीर काव्य कोश

डॉ० वासुदेव सिंह

द्वितीय संस्करण : 2011 ई०

पृष्ठ : 472

सजि. : रु० 450.00 ISBN : 978-81-7124-791-2

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

कबीर की भाषा की शक्ति और क्षमता का परिचय उनके शब्द-भाण्डार से मिलता है। उनका शब्द-ज्ञान असीम था। तत्कालीन प्रचलित ब्रज, अवधी, खड़ी बोली, बुंदेली, राजस्थानी, भोजपुरी आदि बोलियों के अतिरिक्त पंजाबी, गुजराती आदि भारतीय भाषाओं तथा अरबी-फारसी आदि विदेशी भाषाओं के लोक-प्रचलित शब्द उनके काव्य में अनायास और स्वाभाविक रूप से प्रयुक्त दिखाई पड़ते हैं। उन्होंने शब्दों का चयन जीवन के विस्तृत क्षेत्र से किया था। वस्तुत: शब्द-निर्माण का सबसे बड़ा कारखाना भारतीय गाँव रहे हैं, जहाँ विभिन्न वर्गों, व्यवसायों तथा जातियों के अधिकांश लोग रहते हैं। कबीर ने शब्दों को इसी विशाल जन-जीवन से लिया था। उनके द्वारा प्रयुक्त ऐसे बहुसंख्यक शब्द अब खड़ी बोली में प्रचलित नहीं रह गए हैं। खड़ी बोली का एक बहुत बड़ा दोष यह है कि उसमें बनावटी और जीवन से विलग शब्द गढ़कर लिए जाते हैं। किन्तु वह लोक-जीवन से दूर होती जा रही है। कबीर ने लोहार, कुम्हार, बढ़ई, जुलाहा, कलवार, कृषक आदि के जीवन और व्यवसाय से जिन शब्दों को लिया है, उनमें से अधिकांश अब अप्रचलित हो गए हैं। कुछ शब्द तो इतने व्यंजक और अर्थ-गाम्भीर्य-सम्पन्न हैं कि उनके पर्याय खड़ी बोली में खोजना बहुत कठिन हैं।

कबीर के समय तक अरबी-फारसी भाषा का भी प्रयोग काफी बढ़ गया था। अरबी मुस्लिम शासकों की धर्म-भाषा थी और फारसी राजभाषा। इसलिए मुस्लिम शासन में इन दोनों भाषाओं का प्रचार खूब बढ़ गया था। हिन्दी के सभी भक्त कवियों—सूर, तुलसी आदि ने भी इन भाषाओं के शब्दों का काफी मात्रा में प्रयोग किया है। कबीर में भी ऐसे शब्द बहुत बड़ी संख्या में पाए जाते हैं, जो उस समय तक जन-जीवन में घुल-मिल गए थे।

इस प्रकार कबीर के काव्य में विभिन्न भाषाओं बोलियों के शब्दों के भिन्न-भिन्न अर्थों में प्रयोग उनके पाठक के समक्ष अनेक प्रकार की समस्या पैदा कर देते हैं और प्राय: उनका अर्थ करने में भ्रान्तियाँ हुई हैं। इसी असुविधा को दूर करने के प्रयोजन से यह 'कबीर काव्य कोश' तैयार किया गया है। यत: कबीर में सामान्य शब्दों के साथ ही पारिभाषिक एवं प्रतीकात्मक शब्दों का भी बाहुल्य है और ऐसे शब्द अर्थ की गम्भीर समस्या पैदा करते हैं, अत: पारिभाषिक एवं प्रतीकात्मक शब्दों को अलग से विस्तृत अर्थ के साथ दिया गया है। कबीर में संख्यावाची शब्द भी बहुत हैं। इनके प्रयोग में उन्होंने प्राय: संकेतात्मक पद्धति का सहारा लिया है। अत: संख्यावाची शब्दों को भी अलग करके प्रस्तुत किया गया है। कबीर को भारतीय सांस्कृतिक परम्परा का अच्छा ज्ञान था। उन्होंने पौराणिक-ऐतिहासिक सन्दर्भों का विपुल मात्रा में प्रयोग किया है। कोश के अन्त में ऐसे सन्दर्भों का विस्तृत परिचय भी दे दिया गया है। इससे प्रस्तुत कोश की सार्थकता एवं महत्ता बढ़ गई है।

कबीर के काव्य और भाषा के मर्म को समझने के लिए यह कोश एक अनिवार्य ग्रन्थ है।

पाठकों के पत्र

'भारतीय वाङ्मय' का नवम्बर-दिसम्बर संयुक्तांक 2010 अंक मेरे सामने है। मैं यह अंक आद्योपान्त पढ़ गया, बहुत पसन्द आया। आपने गागर में सागर भर दिया है। 'किताबों की खुशबू' मन में भर गयी। आपने अपने सम्पादकीय में उस खुशबू को वाणी दी है और साहित्य की स्थिति तथा साहित्यकारों की मन:स्थिति का सही चित्रांकन किया है। प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र का लेख 'मन्दिरों में पशुबलि' शोधपूर्ण, ज्ञानवर्धक और महत्त्वपूर्ण लेख है। लेखक को मेरी बधाई। पुस्तकों की समीक्षाएँ अच्छी लगीं।

आपने अपनी लघु पत्रिका में लेखकों के पुरस्कार और सम्मान, पुस्तकों के लोकार्पण, रचनाकारों के निधन आदि के समाचार देकर लेखकों और प्रकाशकों को जो जानकारियाँ दी हैं, उनसे पत्रिका और महत्त्वपूर्ण बन गयी है। मेरी बधाई स्वीकार करें। **—रामावतार,** गाजीपुर

आप द्वारा प्रेषित 'भारतीय वाङ्मय' का संयुक्तांक (जनवरी-फरवरी 2011) मुझे प्राप्त हुआ धन्यवाद। भारतीय संविधान के मूलभूत अधिकारों के निरन्तर कदाचारों के प्राय: उदाहरण मिलते रहे हैं। कश्मीर में वर्ग विभेद जनित आतंकवाद जो पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित रिमोट द्वारा संचालित होता है को ऐसे लोगों के विरुद्ध राष्ट्रद्रोही मानकर कठोर कार्यवाही आवश्यक है। ऐसे लोगों के साथ देशहित के विपरीत 'मानवाधिकार हनन' की बात करने वाली लेखिका अरुन्धती राय को कदापि क्षमा नहीं किया जा सकता है। ऐसे लोगों को पहचान कर समाज और राष्ट्रहित में उन्हें बेनकाब करने के लिए कृपया मेरी बधाई स्वीकार करें।

—सर्बदमन राय, बलिया

'भारतीय वाङ्मय' में अपनी रचना 'किताबों की खुशबू' प्रकाशित देखी, अच्छा लगा। एतदर्थ धन्यवाद।

सामयिक मुद्दों पर आपके सम्पादकीय बड़े बेबाक और विचारपूर्ण आ रहे हैं, नवम्बर-दिसम्बर 2010 के इस अंक में भी 'समय-संक्रमण के अन्त:साक्ष्य' में आज के बाजारवादी युग में बाजार की भेंट चढ़ती हमारी शिक्षा, संस्कृति, अस्मिता और भाषा को लेकर जो चिन्ता प्रकट की गयी है, वह मानो इन मुद्दों के प्रति जागरूक और चिन्तित समस्त प्रबुद्ध मानस की ही अभिव्यक्ति है।

प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र के सुचिन्तित और गहन शोधपरक आलेख बहुत से तमस को हटाने में कामयाब हो रहे हैं। यों, इस छोटी पत्रिका में सजी सामग्री के बारे में यह कहने की आवश्यकता नहीं, यह जिन-जिनके पास पहुँचती है—उन सभी के अनुभव की बात है कि हाथ में आते ही आद्यन्त पूरी पढ़कर ही रखी जाती है। स्वनामधन्य स्व० पुरुषोत्तमदास मोदीजी की इस विरासत को आपने इतने यत्न से सँभाला है, यह उन सभी सौभाग्यशाली जनों के लिये परम सन्तोष की बात है, जिन-जिन तक यह पहुँचती है। भारतीय वाङ्मय की गौरवशाली परम्परा को सहेजती, सँवारती और विस्तार देती यह अति महत्त्वपूर्ण पत्रिका 'भारतीय वाङ्मय' यों ही आगे चलती रहे, यही कामना है।

—डॉ० हरीशकुमार शर्मा
अरुणाचल प्रदेश

'भारतीय वाङ्मय' का मार्च-अप्रैल, 2011 अंक प्राप्त कर प्रसन्नता हुई। पुस्तकों के महत्त्व पर वर्षों से आप लगातार सामग्री प्रस्तुत कर रहे हैं। इस कार्य से पुस्तकों के पठन-पाठन के प्रति निश्चय ही सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं। 'बीबीसी का टिमटिमाता दिया' शीर्षक आलेख पढ़कर काफी निराश हुआ। जिस बीबीसी को सुनने के लिए कभी लोग लालायित रहते थे, टीवी, कम्प्यूटर के युग में उसकी ऐसी स्थिति होगी, कभी सोचा भी न था। 'जाति स्वाभिमान का विषय' आलेख बिलकुल व्यावहारिक एवं यथार्थपूर्ण है। जाति व्यवस्था के मूल में जो वैज्ञानिक दृष्टि समाहित है उसे आधुनिक प्रपंचवादी एवं दाढ़ी बढ़ाकर चश्मा लगाए, कांख में अखबार दबाए मार्क्सवादी/वाममार्गी बुद्धिजीवी कभी नहीं समझ पाए। इस लेख से उन्हें थोड़ी भी चेतना जगे तो लेखक का परिश्रम सार्थक होगा। विभिन्न साहित्यिक गतिविधियों एवं पुस्तकों की जानकारी इस पत्रिका के द्वारा हम जैसे दूरस्थ व्यक्तियों को काफी लाभान्वित करती है। एतदर्थ आपको धन्यवाद।

—डॉ० हरेराम पाठक
तिनसुकिया, असम

आगामी प्रकाशन

हिन्दू राज्य-तन्त्र

(प्रथम व द्वितीय खण्ड)

काशीप्रसादजी जायसवाल

अनुवादक : रामचंद्र वर्म्मा

यह हिन्दू राज्यतन्त्र—जो दो खण्डों में विभक्त है और जिसके पहले खण्ड में वैदिक समितियों तथा गणों का और दूसरे खण्ड में एकराज तथा साम्राज्य शासन-प्रणालियों का वर्णन है, हिन्दुओं के वैध शासन-सम्बन्धी जीवन का खाका है। यह विषय बहुत बड़ा है, परन्तु इसका विवेचन नम्र है। इस विषय के प्राचीन ग्रन्थ बहुत दिनों से लुप्त हैं; और उनमें जिस मार्ग का प्रदर्शन किया गया था, वह मार्ग बहुत दिनों से लोग भूल गए हैं। वह मार्ग फिर से ढूँढकर निकालना पड़ा था। सन् 1911-13 में दण्डनीति के क्षेत्र में प्राचीनों का राजमार्ग ढूँढने के लिए एक सम्भावित रेखा खींची गई थी। इन पृष्ठों में वही रेखा अधिक प्रशस्त और गम्भीर की गई है। और अब पूर्व-पुरुषों का पथ दृष्टिगोचर हो गया है।

लेखक ने यह जानने के लिए विशेष रूप से अध्ययन किया था कि यदि प्राचीन भारतवासियों ने वैध-शासन-सम्बन्धी कोई उन्नति की थी, तो वह कैसी थी। सन् 1911 और 1912 में इस अध्ययन के कुछ परिणाम Calcutta Weekly Notes नामक कानूनी सामयिक पत्र तथा कलकत्ते की मासिक 'मॉडर्न रिव्यू' में प्रकाशित किया गया था। सन् 1912 के हिन्दी साहित्य-सम्मेलन में इसी से सम्बद्ध एक निबन्ध पढ़ा गया था और सन् 1913 में 'मॉडर्न रिव्यू' में An Introduction to Hindu Polity नाम से उसका अनुवाद प्रकाशित किया गया था।

वक्रोक्तिजीवितम्

संशोधित एवं परिवर्धित

हिन्दी व्याख्या अनुवाद तथा समीक्षात्मक भूमिका सहित

व्याख्याकार तथा सम्पादक

डॉ० दशरथ द्विवेदी

प्राचीन भारतीय काव्यशास्त्र के इतिहास में अद्वितीय काव्यतत्त्वज्ञ हैं आचार्य कुन्तक, जिनकी एकमात्र उपलब्ध किन्तु खण्डित कृति 'वक्रोक्तिजीवितम्' से संस्कृत काव्यशास्त्र की अमरबेल में एक और अपूर्व अभिनव वक्रोक्तिशाखा की लुनाई की विविध भङ्गी छाया का प्रादुर्भाव हो गया है।

कुन्तक की एकमात्र उपलब्ध कृति है 'वक्रोक्तिजीवित' और इस लुप्तप्राय ग्रन्थ को प्रकाश में ले आने का समस्त श्रेय है डॉ० सुशीलकुमार दे को। ग्रन्थ जितना ही महत्त्वपूर्ण है उसके पाण्डुलिपि की उपलब्धि तथा प्रकाशन की गाथा भी उतनी ही दिलचस्प। प्रकृत संस्करण के अतिरिक्त इस महनीय ग्रन्थ के चार संस्करण प्रकाश में आ चुके हैं। किन्तु सभी संस्करणों का आधार है डॉ० दे की सम्पादित वक्रोक्तिजीवित ही।

वक्रोक्तिजीवित कारिका तथा वृत्ति में लिखा गया है। दोनों का लेखक एक ही व्यक्ति है; वह हैं आचार्य कुन्तक। कारिका तथा वृत्ति को अलग-अलग अभिधान देने का कोई औचित्य दृष्टिगत नहीं होता। अत: विद्वानों के इस विवाद को बिना स्पर्श किये ही यह कहना अधिक संगत होगा कि, कारिका तथा वृत्ति पूरे को मिलाकर कुन्तक के ग्रन्थ का नाम है वक्रोक्तिजीवित। पूर्व में ग्रन्थ के पाँच उन्मेष में होने की चर्चा हुई है। किन्तु उपलब्ध ग्रन्थ, टूटी-फूटी जिस भी अवस्था में है, चार उन्मेषों मे विभक्त किया गया है। प्रथम उन्मेष के प्रारम्भ में कुन्तक ने कारिकाभाग के मङ्गल श्लोक से वाग्देवता की वन्दना की है। विवेच्य विषय है, काव्यालङ्कार अतएव तत्प्रतिपादक ग्रन्थ के प्रारम्भ में उसके अधिदेवता की स्तुति उचित ही है। वृत्तिभाग के मङ्गल में कुन्तक ने शक्तिपरिस्पन्द मात्र उपकरण शिव की वन्दना की है। कश्मीरी होने के कारण कुन्तक पर भी प्रत्यभिज्ञादर्शन का प्रभाव स्वाभाविक था। अत: परमशिव की वन्दना करते हुए कुन्तक ने काव्य तथा काव्यशास्त्र में प्रचलित स्वभाव कथन तथा प्रौढ़, या वक्रवर्णन की आलोचना करते हुए तथा स्वतन्त्र ध्वनिसिद्धान्त का अनादर किये बिना काव्यार्थ के तत्त्वभूत वक्रोक्ति के उन्मीलन-प्रयास प्रारम्भ किया है।

वक्रोक्तिजीवित नामक ग्रन्थ के निर्माण का लोकोत्तर-चमत्कारकारी वैचित्र्यसम्पादनरूप प्रयोजन बताने के अतिरिक्त कुन्तक ने काव्य के अन्य प्रयोजनों का भी निर्देश किया है। ग्रन्थ के अनुसार धर्म, अर्थ, काम, मोक्षरूप पुरुषार्थचतुष्टय का उपदेश ही सर्गबन्ध निर्मित काव्य का प्रयोजन है। यद्यपि पुरुषार्थचतुष्टय का उपदेश शास्त्रों से भी सम्भव है किन्तु शास्त्र दुरवगाह तथा कठोर रीति से नियमों का सम्पादन करते हैं।

काव्य के तृतीय प्रयोजन में कुन्तक ने व्यवहार-ज्ञान को प्रस्तुत किया है। सत्काव्य के द्वारा सामाजिक को सम्राट् आदि के सच्चरित्रों के माध्यम से अलौकिक औचित्यानुसारि लोक-व्यवहार के क्रियाकलापों का अधिगम कराया जाता है। अन्य शास्त्रों की अपेक्षा लोकव्यवहारादि का ज्ञान यहाँ आसान तरीके से निष्पन्न हो जाता है। अतएव काव्य उपयोगी होता है।

काव्य का अन्तिम प्रयोजन है सहृदय-हृदय में रसानन्द की सृष्टि द्वारा चमत्कार का आधान करना। काव्यामृत का यह आनन्द चतुर्वर्गफल के आस्वाद से भी बढ़कर चमत्कृति का विस्तार करता है।

मेघदूत : एक अनुचिन्तन

[मूल और मूल्याङ्कन]

श्रीरञ्जनसूरिदेव

इस 'अनुचिन्तन' में श्री श्रीरञ्जनसूरिदेव ने अनेक दृष्टिकोण से मेघदूत के ऐसे अनुपम काव्य को देखने की चेष्टा की है। इस प्रयत्न में उन्होंने प्राचीन जैन टीकाकारों की सहायता ली है, जो कालिदास-वाङ्मय का एक सुन्दर अलङ्कार गिना जा सकता है। साथ-साथ आधुनिक विज्ञान का भी सहारा लिया है—'मनोवैज्ञानिक तत्त्व', 'विज्ञान-तत्त्व' तथा 'गीत और सङ्गीत-तत्त्व' शीर्षक अध्याय।

काव्य के अनेक गुणों पर श्रीसूरिदेवजी ने प्रचुर मात्रा में प्रकाश डाला है। 'मेघदूत के कतिपय समस्यामूलक प्रयोग' अध्याय में वर्तमान शोध का पूरा प्रयोग किया गया है।

शास्त्रीय पद्धति आधारित इस आलोच्य ग्रन्थ में मेघदूत की प्राचीन टीकाओं, पाश्चात्य विद्वानों के मत और उन पर लेखक के अपने निष्कर्ष हैं। काव्यगत विशेषताओं की आलोचना कर लेखक ने हिन्दी में मेघदूत के काव्य-रसिकों का बड़ा उपकार किया है।

श्रीरञ्जन सूरिदेव ने प्रस्तुत संस्करण में जहाँ 'मेघदूत' की वल्लभादेववाली टीका को प्रामुख्य देकर एक नई दिशा की ओर संकेत किया है, वहाँ साथ-ही-साथ कालिदास के काल-निर्णय, उनकी काव्यगत विशिष्टताओं, आधारभूत दार्शनिक तथ्यों, मनोवैज्ञानिक तत्त्वों, सम्बद्ध अध्ययनीय सामग्रियों, प्राय: सभी ऐसे विषयों का उच्चस्तरीय विवेचनात्मक प्रतिपादन किया है, जो कालिदास-साहित्य के अध्येता अथवा अनुसन्धित्सु के लिए न केवल उपयोगी हैं, अपितु महत्त्वपूर्ण हैं।

अध्येताओं, पुस्तकालयों, शिक्षा संस्थाओं

के लिए

साहित्यिक तथा विभिन्न विषयों की हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत पुस्तकों का विशाल संग्रह

तीन हजार वर्ग फुट में विशाल शोरूम

विश्वविद्यालय प्रकाशन

विशालाक्षी भवन, चौक

(चौक पुलिस स्टेशन परिसर के पार्श्व में)

वाराणसी - 221 001 (उ०प्र०)

Phone & Fax : (0542) 2413741, 2413082

E-mail : vvp@vsnl.com & sales@vvpbooks.com

Website : www.vvpbooks.com

प्राप्त पुस्तकें और पत्रिकाएँ

श्रीमद्भगवद्गीता : टीका संहिता, टीकाकार : डॉ० शेषमणि त्रिपाठी, प्रकाशक एवं प्राप्ति स्थान : ए-62, जिगर कॉलोनी, मुरादाबाद-244001, मूल्य अमूल्य।

× × × अध्ययनमूलक अध्यवसाय एवं भगवद्भक्ति से आवेशित डॉ० शेषमणि त्रिपाठी कृत प्रस्तुत टीका सचमुच परिपूर्ण है। लगभग सहस्र पृष्ठ समन्वित टीका के विशाल कलेवर में श्रीमद्भगवद्गीता के मूल श्लोक के साथ पदच्छेद, अन्वय, शब्दार्थ, पद व्याख्या, श्लोकानुवाद एवं भावार्थ प्रस्तुत कर लेखक ने इसे 'गीतातत्व प्रबोधिनी' का जो स्वरूप प्रदान किया है वह श्लाघ्य है। गीता की यह टीका निश्चित ही विद्वज्जनों में समादृत होगी।

प्रकृति रहस्य, संकलक/प्रकाशक : ओम प्रकाश छारिया, फ्लैट नं० 102, दूसरी मंजिल, 'साईंराजा रेज़ीडेंसी' बिल्डिग, 5-9-22/107, आदर्शनगर, एक्ज़िट रोड, हैदराबाद-63, संस्करण : प्रथम, मूल्य : आपका स्नेह।

××× आस्तिक मन:स्थिति में प्रकृति के अनसुलझे रहस्यों को समझने-समझाने की एक कोशिश है प्रस्तुत संकलन। किसी भी विषय के जिज्ञासु छात्र/विद्वान/पाठक के लिए पठनीय है यह पुस्तक।

साम्य-26, सम्पादक : विजय गुप्त, प्रकाशक : प्रगतिशील लेखक संघ, अम्बिकापुर-497001, जिला : सरगुजा, छत्तीसगढ़, मूल्य : 60.00 रुपये मात्र।

× × × 'साम्य' पत्रिका का अंक-26, फरवरी 2011 आचार्य डॉ० रामविलास शर्मा पर एकाग्र है। यह अंक स्व० डॉ० शर्मा की जन्मशती से कुछ पहले प्रकाशित करते हुए 'साम्य' ने उन्हें श्रद्धांजलि दी है। लगभग 19 आलेखों के जरिये हिन्दी-आलोचना के इस विराट् व्यक्तित्व की स्मृति, मूल्यांकन एवं श्रद्धांजलि का यह प्रयास महत्त्वपूर्ण है। साहित्यान्वेषकों के लिए 'साम्य' का यह अंक पठनीय और संग्रहणीय है।

केवलकृष्ण पाठक : व्यक्तित्व-कृतित्व, सम्पादक : रामफल सिंह 'खटकड़', प्रकाशक : रवीन्द्र ज्योति साहित्य मंच, आनन्द निवास, गीता कॉलोनी, जीन्द-126102 (हरियाणा), संस्करण : प्रथम, मूल्य : 200.00 रुपये मात्र।

× × × 'रवीन्द्र ज्योति' मासिक पत्रिका के सम्पादक, कवि, लेखक, पत्रकार डॉ० केवलकृष्ण पाठक के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का आकलन करते हुए विभिन्न आलेखों का उत्तम संकलन है यह पुस्तक। आठ अध्यायों में विभक्त यह ग्रन्थ डॉ० पाठक के प्रत्येक परिचित-अपरिचित आयामों का उद्घाटन करता है।

स्वतंत्र पत्रकारिता, लेखक : डॉ० गौरीशंकर गुप्त, प्रकाशक : राष्ट्रपिता प्रकाशन, गायघाट चौमुहानी, वाराणसी-221001, संस्करण : प्रथम, मूल्य 75.00 रुपये मात्र।

× × × साहित्यिक रचनाकर्म की तरह पत्रकारिता भी एक सामाजिक-मिशन है। इन मिशनरियों के बीच स्वतंत्र रूप से पत्रकारिता को मिशन के तौर पर स्वीकार करने वाले पत्रकारों के संघर्ष, कठिनाईयों और आर्थिक अभावों का दस्तावेज है डॉ० गौरीशंकर गुप्त लिखित यह पुस्तक। आज़ादी पाने के पूर्व पत्रकार जीवन की यह नैतिक ज़िम्मेदारी थी और उसके बाद से यह जिम्मेदारी एक आदर्श है। इक्कीसवीं सदी के इस दौर में जब पत्रकारिता व्यवसाय बन चुकी है उसके बीच पत्रकार को स्वतंत्र, निर्भीक और सत्याश्रयी बनकर जनता के प्रति अपनी उसी जिम्मेदारी का निर्वाह करना होगा।

आवऽ गावल जाय (भोजपुरी काव्य-संग्रह), कवि : इंजी० संजीव कुमार गुप्त 'विविध', प्रकाशक : रामआधार गुप्त स्मृति संस्थान, कचहरी रोड, गाजीपुर-233001, संस्करण : प्रथम, मूल्य : 100.00 रुपये मात्र।

एकविशाल जनसमुदाय की मातृभाषा एवं मानक हिन्दी के साथ संयुक्त लोकभाषा भोजपुरी अपने ग्रामीण अंचल की सोंधी खुशबू और लोकरंग की विविधता की परिचायक है। इसी मातृभाषा के लोकतत्वों में पिरोये गये भावों की आत्माभिव्यक्ति है प्रस्तुत काव्य-संग्रह। गीतों का यह मेला आकर्षक और प्रेरणास्पद बन पड़ा है।

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 12 **मई-जून 2011** **अंक : 5-6**

संस्थापक एवं पूर्व प्रधान संपादक

स्व० पुरुषोत्तमदास मोदी

संपादक : **परागकुमार मोदी**

वार्षिक शुल्क : रु० 60.00

अनुरागकुमार मोदी

द्वारा

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

के लिए प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०

वाराणसी *द्वारा मुद्रित*

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2009-11

RNI No. UPHIN/2000/10104

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत

Licenced to post without prepayment at

G.P.O. Varanasi

Licence No. LWP-VSI-005/2009-2011

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन

प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)

विशालाक्षी भवन, पो०बॉक्स 1149

चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN

Premier Publisher & Bookseller

(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIANS)

Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149

Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)

☎ : Offi. : (0542) 2413741, 2413082, 2421472, (Resi.) 2436349, 2436498, 2311423 ● Fax : (0542) 2413082

E-mail : sales@vvpbooks.com ● Website : **www.vvpbooks.com**